Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

आतंकवाद एक वैश्विक समस्या

श्रीमती राधिका
असिस्टेन्ट प्रोफेसर- राजनीति विज्ञान विभाग
ए.के.पी. डिग्री कॉलेज, खुर्जा (बुलन्दशहर)।

आतंकवाद एक भयानक परिघटना है, जिसका इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन युग में इसके लक्षण या उदाहरण देखे जा सकते हैं, जब शासक या उसके शत्रु आतंकवादी तरीकों का प्रयोग करते थे। प्राचीन यूनानी इतिहासकार जेनोफोन (Xenophon) से लेकर आधुनिक युग में चीन के माओ (Mao) तक ऐसे अनेक लेखक हुए हैं, जिन्होंने इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। लेकिन उल्लेखनीय बात यह है कि अब इस परिघटना ने एक भयंकर विचारधारा का रूप धारण कर लिया है, जिसे वामपंथी व दामपंथी संगठनों, धार्मिक कट्टरपंथियों तथा परा–राष्ट्रवादियों, यहाँ तक कि किन्हीं राज्यों के शासकों व सैनिकों ने इसे किसी न किसी मात्रा में अपना लिया है। ऐसा लगता है कि इस परिघटना एवं विचारधारा ने वही भयंकर रूप धारण कर लिया है जो किसी समय रूस के बोल्कशेविकवाद, इटली के फासीवाद या जर्मनी के नात्सीवाद ने धारण किया था।

उदय, अभिप्राय व प्रकृति (Origin, Meaning and Nature)

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि आंतकवाद पुराने समय से चला आ रहा है। यूनानी इतिहासकार जेनोफोन ने शत्रुओं के खिलाफ मनोवैज्ञानिक युद्ध की प्रभावशीलता के बारे में लिखा है। रोमन सम्राट जैसे रायबेरियस व कैलीग्युला अपने विरोधियों के दमन के लिए बहुत कठोर साधनों का प्रयोग करते थे, जैसे– देश से निकालना, सम्पत्ति छीन लेना या खुले आम फाँसी लगा देना। जोशीले यहूदियों का संगठन 'सिकाराई' (छुरेधारी यहूदियों का गुट) इसी का उदाहरण है। जब अमेरिका में गृहयुद्ध चल रहा था (1860.65), तो वहाँ गोरे देशवासियों ने काले नीग्रो लोगों को भयभीत करने के लिए कू क्लक्स क्लान (Ku Klux Klan) नामक संगठन बना लिया था। आज भी ऐसे अनेक संगठन कार्यरत हैं, जैसे–आयरलैण्ड में आयरिश रिपब्लिकन आर्मी, श्रीलंका में तमिल टायगर्स, फिलिस्तीन में हमस, लेबनान में हिज्बुल्लाह, अफगानिस्तान में तालिबान व अलकायदा, पाकिस्तान में लश्कर–ए–तैयबा व जैशे मुहम्मद आदि।

आतंकवादी संगठनों का कोई भी नाम हो, मुख्य बात यह है कि वे सभी क्रमबद्ध या व्यवस्थित रूप में हिंसात्मक साधनों का प्रयोग करते हैं, ताकि जनता में भय का सामान्य वातावरण पैदा हो जाए और किसी विशेष प्रकार के राजनीतिक ध्येय की सिद्धि की जा सके। आतंकवाद को एक प्रकार की राजनीतिक दृष्टि से प्रेरित किया है, जिसमें मनोवैज्ञानिक (भय पैदा करने वाले) तथा भौतिक

(हिंसात्मक क्रिया) के तत्व शामिल हैं, जिन्हें लोगों के ऐसे संगठन इस्तेमाल करते हैं ताकि राज्य का शासन या किसी अन्य संगठन के लोग उनकी माँगों को सन्तुष्ट करें। ऐसी क्रियाएँ शासन के विरोधियों द्वारा की जाती हैं, जो कोई भी भयानक क्रिया कर सकते हैं, जैसे– महत्वपूर्ण केन्द्रों पर बमबारी, हवाई जहाज या किसी वाहन का अपहरण, किसी अधिकारी या उसके सहायकों या परिजनों को अगुवा करके बन्दी बना लेना, धार्मिक या पवित्र स्थलों पर बम विस्फोट, किसी महत्वपूर्ण शासक या नेता की हत्या, अग्निकांड, भयंकर धमकी से कड़ी चुनौतियाँ या चेतावनियाँ आदि। 'संक्षेप में, आतंकवाद एक राजनीतिक एवं लक्ष्योन्मुखी क्रिया है, जिसमें असाधारण हिंसा का प्रयोग या उसकी धमकी समाहित होती है, जिसका भौतिक की अपेक्षा मनौवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है तथा जिसके शिकार यांत्रिक न होकर प्रतीकात्मक होते हैं।'

सामान्य अर्थ में, आतंकवाद संगठित हिंसा है, जिसका रुख राज्य या उसके किसी अधिकारी की ओर होता है, ताकि कोई राजनीतिक लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। इसमें हिंसा का तत्व अन्तर्निहित है, ताकि अपने विरोधी को आतंकित करके उसका दमन किया जा सके। यह मात्र हिंसा का मामला नहीं है, बल्कि आतंकवादी तरीकों से दमन फैलाना है, ताकि लोगों को ऐसा कार्य करने पर बाध्य किया जा सके, जो वे अपने तथा दूसरों के लिए कदापि नहीं करते, यदि उनके सिर पर मौत, चोट या दर्द का भय नहीं मंडरा रहा होता। कुछ माँगों को उठाकर ऐसे आतंकवादी काम किए जाते हैं। लेकिन यह प्रयास किया जाता है कि वातावरण में आंतक फैल जाए। साथ ही उस भयानक क्रिया का यथासम्भव अधिकाधिक प्रचार भी हो। आतंकवादी लोग ऐसे गन्दे कार्यों को सम्पन्न करके उनका श्रेय लेने में संतोष का अनुभव करते हैं और इसी में यह लक्षण निकलता है कि आंतक फैलाने वालों का ध्येय मात्र भौतिक क्षति पहुँचाने तक सीमित नहीं होता। इस प्रकार राजनीतिक आतंकवाद का अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह द्वारा हिंसा या उसके प्रयोग की धमकी, चाहे वह किसी सुस्थापित सत्ता के समर्थन के विरोध में ऐसा कर रहा हो, क्योंकि ऐसी क्रिया के पीछे मन्तव्य ऐसा चिन्तामय भय फैलाना है ताकि उनका दमन करके वे अपनी माँगों को पूरा करा सकें।

स्पष्ट है कि आतंकवाद का ध्येय योजनाबद्ध तरीके से हिंसा का प्रयोग करना है, ताकि डर का माहौल पैदा करके अपने राजनीतिक प्रयोजनों को सिद्ध किया जा सके। आतंकवादी नेतागण व उनके संगठन गुप्त रूप से अपना आन्दोलन चलाते हैं। वे जानते हैं कि खुले युद्ध में उनका काम पूरा नहीं हो सकता। अतः आतंकवादी गतिविधियाँ युद्ध जैसी नहीं होतीं, न ही वे मात्र विप्लवकारी होती हैं, हाँ छापामार युद्ध से उनकी समानता स्थापित की जा सकती है। हर आतंकवादी गतिविधि में अपराधिकता का तत्व निहित होता है। इसीलिए, अमेरिका के संघीय जाँच–पड़ताल विभाग (Federal Bureau of Investigation) के अनुसार यह लोगों व उनकी सम्पत्ति के खिलाफ, बल व हिंसा का प्रयोग है, ताकि सरकार, नागरिक जनसंख्या या उनके किसी भाग को धमका कर या दबाकर अपने राजनीतिक व सामाजिक लक्ष्यों को सिद्ध किया जा सके।

ऐसा विवरण प्रस्तुत करने के उपरान्त, हम आंतकवाद के निम्न लक्षणों का उल्लेख कर सकते हैं :

1. इसमें हिंसा के प्रयोग या उसकी धमकी समाहित हैं, इसका ध्येय भय उत्पन्न करना है। मात्र अपने लक्षित शिकार के लिए नहीं, बल्कि पर्याप्त जनसंख्या के बीच ऐसा वातावरण फैल जाना चाहिए।
2. जिस मात्रा में आतंकवाद भय पर आश्रित होता है, वहीं इसे परम्परागत व छापामार युद्ध से भिन्न करता है– छापामार युद्ध निर्बल पक्ष का यन्त्र है, आतंकवाद निर्बलतम पक्ष का।

3. व्यापक पैमाने पर भय फैलाना जरूरी है, क्योंकि अपनी ख्याति फैलाने हेतु ऐसा करना जरूरी है। अतः आतंकवादी लोग व उनके संगठन अपने आक्रामक कार्यों को बराबर बढ़ाते रहते हैं, जैसे– वाहनों या यानों का अपहरण, महत्वपूर्ण लोगों को अगुवा करके बन्द रखना, बमों का विस्फोट तथा आत्मघाती दस्तों का प्रयोग।

4. सामन्यतया आतंकवाद का ध्येय उन स्थानों में लोगों के सुरक्षा भाव को मिटाना है, जिनसे वे सुपरिचित होते हैं। इसीलिए, बड़ी इमारतें, कार्यालय, पुल, महत्वपूर्ण केन्द्र, पूजा स्थल आदि उनके निशाने पर होते हैं।

5. आतंकवादी लोग दोषी व निर्दोष के बीच अर्थात् अपने लक्षित शत्रुओं व आम जनता के बीच अन्तर नहीं करते, क्योंकि ऐसा करने से उनका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।

6. आतंकवाद को प्रबल बनाने में किसी विचारधारा या राजीतिक अनुभववाद को प्रेरक तत्व माना जा सकता है। यदि नक्सलवादी साम्यवाद से प्रेरणा लेते हैं, तो अलकायदा वाले इस्लामी कट्टरवाद से।

7. आतंकवाद मात्र सरकारी अधिकारियों को अपना निशाना नहीं बनाता, बल्कि यह भी हो सकता है कि राजकीय संस्थाएँ अपने विरोधियों को कुचलने के लिए ऐसे साधनों का प्रयोग करें।

इन्हीं बिन्दुओं को अपने ध्यान में रखते हुए एक लेखक के अनुसार, ''आतंकवाद का अर्थ है अपने राजनीतिक प्रयोजनों की सिद्धि हेतु आतंक के तरीकों का प्रयोग करना, ताकि भय आशंका व अनिश्चितता का माहौल बने।

आतंकवाद के रूप (Forms of Terrorism) :

आतंकवाद की परिभाषा में युद्ध, छापामार युद्ध तथा विपल्व के तत्व निहित हैं किन्तु इसे उन सभी से भिन्न किया जा सकता है। युद्ध दो पक्षों के बीच खुला मुकाबला है, जिसमें दोनों पक्ष अपने परम्परागत व रासायनिक यन्त्रों का प्रयोग करते हैं। छापामार युद्ध में विरोधी पक्ष गुप्त या भूमिगत होकर अपना कार्य करता है। उसका उद्देश्य अपने शत्रु को हराना या कमजोर करना है, वह परम्परागत व रासायनिक यन्त्रों का प्रयोग करता है, इसीलिए आतंकवाद व ऐसे युद्ध के बीच अन्तर धूमिल हो जाता है, लेकिन आतंक व विप्लव के बीच अन्तर की स्पष्ट रेखा खींची जा सकती है। विप्लवकारी राष्ट्रवादी होते हैं, जो किसी अवैध शासन को हटाकर अपना वैध शासन स्थापित करना चाहते हैं। विप्लवकारियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में अपने देश के राष्ट्रवादी तत्वों से सहायता मिलती है। इसके विपरीत, आतंकवादी देशद्रोही होते हैं, जो राज्य के शत्रु–देशों से सहायता प्राप्त करके अपने राजनीतिक उद्देश्य प्राप्त करना चाहते हैं। उनका ध्येय अवैध शासन को हटाना नहीं, बल्कि भय का माहौल पैदा करके अपना हितसाधन करना है। कोई आलोचक यह कह सकता है कि ऐसा अन्तर निकालना सैद्धान्तिक धरातल पर ही लागू हो सकता है। वास्तविकता यह है कि आतंकवाद विप्लववाद से जुड़ा हो सकता है या नहीं, किन्तु आतंकवाद के बिना विप्लवकारी घटनाएँ नहीं हो सकतीं। ''विप्लव एक विविध–आयामी गतिविधि है जिसमें अनेक स्तरों पर संघर्ष चलता रहता है, लेकिन अक्सर साथ–साथ भी ऐसा हो सकता है।''

आतंकवाद के तीन रूप बताए जा सकते हैं– प्रथम, हम क्रान्तिकारी आतंकवाद को लेंगे। ऐसे लोग किसी राजनीतिक व्यवस्था को पूर्णतया मिटाकर अपनी मनचाही व्यवस्था स्थापित करना चाहते हैं। स्पेन के बास्क या पेरू के शायनिंग पाथ अफगानिस्तान के तालिबान, फिलिस्तीन के हमास आदि इसी का उदाहरण कहे जा सकते हैं। दूसरे, उप–क्रान्तिकारी आतंकवाद यह चाहता है कि

मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था बनी रहे, किन्तु उसकी कुछ शाखाओं या संस्थाओं को मिटा दिया जाए। आयरलैण्ड की आयरिश रिपब्लिकन आर्मी व दक्षिणी अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस को इसी वर्ग में रखा जा सकता है। तीसरे, राज्य–प्रायोजित आतंकवाद इसका विचित्र रूप है। कभी–कभी राज्य की सेनाएँ, पुलिस व उसके अर्द्धसैनिक बल शासकों के विरोधियों को कुचल देते हैं तथा देश में आंतक फैलाकर सत्ताधारी नेताओं को सुरक्षित रखते हैं। आश्चर्य की बात है कि कुछ विदेशी शक्तियाँ गुप्त रूप से कार्य करके ऐसे आतंकवाद में अपना योगदान करती हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका ने अंगोला की पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए राष्ट्रीय यूनियन को तथा अफगानिस्तान में तालिबान को सहायता दी। पाकिस्तान कश्मीर के आतंकवादियों को सहायता दे रहा है।

इन्हीं रूपों को देखकर आतंकवाद की कोई मानक या सुनिश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती। यदि भय का माहौल पैदा करना आतंकवाद की प्रमुख विषेशता है तो खुला युद्ध या छापामार युद्ध का भी वही परिणाम या प्रभाव होता है। दूसरे, आतंकवाद का उजला व मैला दोनों चेहरे हैं। जब कोई राष्ट्रवादी देशद्रोही या राष्ट्र–विरोधी शक्तियों से संघर्ष करता है, तो उसे आतंकवादी कहा जाता है। किन्तु वह जिन लोगों की खातिर ऐसा करता है, उनकी दृष्टि में वह स्वतन्त्रता सेनानी बन जाता है। इसीलिए यह कहावत है कि ''एक का आतंकवादी, अन्य का स्वतन्त्रता सेनानी है।'' तीसरे, सामान्यतया ऐसा लगता है कि आतंकवादी लोग किसी सरकार के विरूद्ध अपना संघर्ष चलाते हैं। लेकिन अब राज्य द्वारा प्रायोजित आतंकवाद भी एक तथ्य बन चुका है, जैसा कम्बोडिया में पोल पाट ने किया या बोसनिया में मिलोसेविक ने। इन्हीं कारणों से आतंकवाद पदबन्ध अब अत्यन्त विवादग्रस्त हो चुका है। स्टालिनवाद व नात्सीवाद ने दिखाया कि राज्य के आतंकवाद को अतार्किक चरम सीमा के दूरस्थ छोर तक ले जाया जा सकता है।''

आतंकवाद और इस्लामी कट्टरवाद (Terrorism and Islamic Fundamentalism):

इस समय इस्लामी कट्टरवाद ने एक भयानक विचारधारा का रूप धारण कर लिया है, जिसकी अभिव्यक्ति अमरीका, ब्रिटेन, रूसी गणराज्य, इजराइल, फिलिस्तीन, सूडान, अल्जीरिया, लीबिया, ईरान व भारत जैसे देशों में होने वाली हिंसात्मक गतिविधियों में देखी जा सकती है। अनेक आतंकवादी संगठन कार्यरत हैं, जैसे– हमास, हिज्बुल्लाह, लश्कर–ए–तैयबा, अल कायदा, जैश–ए–मुहम्मद आदि, जो विश्व के अनेक भागों में बम–विस्फोटों से अंसख्य लोगों के जीवन और सम्पत्ति को अवर्णनीय क्षति पहुँचा रहे हैं। ये कट्टरवादी शक्तियाँ आधुनिकीकरण व विकास को गम्भीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं। लोकतान्त्रिक व्यवस्था या शान्तिपूर्ण साधनों में इनकी आस्था नहीं है। इसलिए, वे पाश्चात्य संस्थाओं को नष्ट करके इस्लामी समाज की शुद्धता को बनाए रखना व उसका विस्तार करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, तालिबान ने अफगानिस्तान में 1996 में अपनी सत्ता स्थापित करने के बाद लड़कियों के शिक्षालय बन्द करा दिए, सिनेमाघरों में नयी छवि की फिल्मों का प्रदर्शन वर्जित कर दिया गया, तथा बौद्धों की मूर्तियाँ तोड़ डाली गयीं। यह कहना उपयुक्त होगा कि ''इस्लामी कट्टरवाद ऐसी विचारधारा है, जो आधुनिक विश्व में एक राजनीतिक व्यवस्था के रूप में इस्लाम धर्म को पुनः स्थापित करने में प्रयासरत है। यह इस्लामी समाज के उन सामाजिक समूहों व संयुक्त वर्गों की भी विरोधी है, जिन्होंने आधुनिकता के जगत के भीतर संस्थाओं, संकल्पनाओं व आदर्शों की रचना की है।''

इस खतरनाक विचारधारा के उदय का मुख्य कारण यह है कि इस्लाम अपने को बीसवीं शती के आधुनिकीकरण के अनुकल नहीं बना सका। पाश्चात्य देशों में सामाजिक व राजनीतिक संस्थाओं की संरचनाओं व उनकी कार्यशैलियों में चमत्कारी परिवर्तन हुए, लेकिन इस्लाम के कट्टरपंथी

वर्ग उन्हें पसन्द नहीं करते। वे उन्हीं परम्पराओं व व्यवस्थाओं को बनाए रखना चाहते हैं जो सातवीं शती में स्थापित हुईं। हम देख सकते हैं कि उदारवादी मुस्लिम लोगों ने इस परिवर्तन को सराहा है तथा वे इन कट्टरपंथियों के आलोचक हैं। किन्तु वे इतने शक्तिषाली नहीं हैं कि इन कट्टरपंथियों से निपट सकें।

कट्टरपंथियों का आग्रह है कि आधुनिकीकरण या विकास के नाम से किए गए सभी परिवर्तन इस्लाम धर्म की कठोर मान्यताओं के विरूद्ध हैं। और यदि संशोधन की प्रक्रिया चलती रही, तो धीरे–धीरे इस्लामी समाज का अस्तित्व ही मिट जाएगा। अपने आग्रहों को सबल बनाने के लिए इस विचारधारा के समर्थक इतिहास, राजनीति व नैतिकता तीनों को अन्तः सम्बन्धित करते हैं। तीनों एक–दूसरे से अनन्य रूप में जुड़े हैं तथा वे एक–दूसरे को प्रबलित करते हैं। ईसाई, यहूदी, हिन्दू, बौद्ध, मार्क्सवादी, तथा सभी रंगों के धर्मनिर्पेक्षवादी इस्लाम के शत्रु हैं।

अतः यदि विश्व में इस्लाम को बनाए रखना है तो इन काफिरों के खिलाफ जिहाद (धर्म युद्ध) चलता रहना चाहिए ताकि दार–उल हर्ब (संघर्ष का स्थान) को दार–उल–इस्लाम में बदला जा सके। प्रगतिवादी होने का दावा करने वाली शक्तियाँ इस्लाम विरोधी हैं, अतः उन्हें अपदस्थ किया जाना चाहिए– इसी भाव से प्रभावित होकर ईरान में इस्लामी प्रवृति आन्दोलन ने अयातुल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में उसे 'इस्लामी क्रान्ति' का नाम दिया तथा 1979 में शाह के शासन को हटाकर वहाँ इस्लामी गणतन्त्र की स्थापना की गई।

इस विचारधारा के प्रमुख सूत्रों को इस प्रकार इंगित किया जा सकता है–

1. मुस्लिम लोग अपने सच्चे रास्ते से विचलित हो गए हैं, वे पाश्चात्य संस्कृति के गुलाम होते जा रहे हैं, यहां तक कि मुस्लिम देशों के शासक पाश्चात्य मूल्यों की प्रशंसा करके उनके साथ विश्वासघात कर रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि मुसलमानों के दिलों में उनके धर्म के प्रति शुद्ध आस्था स्थापित की जाए, उनका स्वाभिमान जगाया जाए तथा अशुद्ध इस्लामी शासन व्यवस्थाओं को पलट दिया जाए।
2. दुनिया में ईसाई देशों की शक्ति का बोलबाला है तथा अमरीका व ब्रिटेन सबसे आगे हैं। अतः इन बड़ी शक्तियों को चुनौती दी जाए, ताकि अमरीकी या ब्रिटिश प्रभुत्व के भ्रम को मिटा दिया जाए। इसीलिए 1 सितम्बर, 2001 को अमरीका में और फिर 7 जुलाई, 2005 को ब्रिटेन में भयानक विस्फोट हुए। इजराइल व भारत भी उनके निशाने पर हैं। उनका ध्येय यहूदियों के राज्य को मिटाकर फिलिस्तीन का एकीकरण करना है तथा भारत की शक्ति को हानि पहुँचाकर पाकिस्तान की माँगों को पूरा करना है।
3. सारी दुनिया में इस्लाम की विजय हो। यदि मार्क्स ने कहा कि ''दुनिया के मजदूरों, एक हो जाओ' तो इस कट्टरपंथी विचारधारा के समर्थकों का नारा है– ''विश्व पर इस्लाम की विजय हो।'' इसीलिए, उनकी भयानक गतिविधियाँ रूसी गणतन्त्र के दो प्रान्तों (चेचेन्या व दागिस्तान) में देखी जा सकती हैं, जहाँ उन्होंने स्वतन्त्र इस्लामी गणतन्त्र बनाने की घोषणा की, जिसे रूस की सरकार ने बलपूर्वक कुचल दिया। उन्होंने अफगानिस्तान पर कब्जा करके अपने कट्टरपंथी कार्यक्रमों को लागू किया। 2001 में अमरीका व ब्रिटेन ने तालिबान के शासन को मिटा दिया, किन्तु वहाँ गुप्त रूप से कट्टरपंथियों की गतिविधियाँ चल रही हैं।
4. आन्दोलन को बड़े पैमाने पर चलाने के लिए बहुत धन व किसी बड़ी शक्ति के

सरंक्षण की आवश्यकता होती है। अतः इस्लामी कट्टरपंथ के लोग गुप्त रूप से कुछ राज्यों से वित्तीय सहायता लेते हैं या तस्करी के कामों से अपनी धन की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। इराक में ऐसे तत्वों को शरण मिल रही थी, इसीलिए 2003 में अमरीका ने वहाँ सद्दाम हुसैन के शासन का अन्त किया। लेबनान की सरकार हिज्बुल्लाह को सरंक्षण दे ही है, इसीलिए इजराइल की वायु सेना ने 2006 में उनके अड्डों पर भारी बमबारी करके उन्हें पूर्णतया नष्ट करने की कोशिश की।

5. एक अर्थ में यह कट्टरवादी विचाराधारा माओवाद से मेल खाती है। चीन के महान मार्क्सवादी नेता माओ ने सुझाव दिया कि कम्युनिस्टों को ग्रामों व नगरों में घुसकर वहाँ की जनता में घुल–मिल जाना चाहिए, ताकि छापामार युद्ध की कार्यवाही को सफल बनाया जा सके। इस्लामी कट्टरवाद भी इसी सूत्र को मानता है। कुछ मदरसों में युवाओं को ऐसा शिक्षण व प्रशिक्षण दिया जाता है और फिर वे अन्य देशों में अपनी घुसपैठ करके अपने गुप्त कार्यक्रम को क्रियान्वित करते हैं। इस्लामी कट्टरवाद, जैसा ब्रिटिश प्रधानमन्त्री टोनी ब्लेयर ने कहा है, इस्लाम के बारे में पूर्णतया अन्धविश्वासी, गलत व प्रतिक्रियावादी धारणा रखते हैं। जिस प्रकार बोल्शेविकवाद (साम्यवाद) उदारवादी जगत को गम्भीर खतरा बना रहा, उसी प्रकार अब इस्लामी कट्टरवाद उदारवादी व्यवस्था के सामने अपना भयानक मुँह खोले खड़ा है। इसीलिए अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी व रूसी गणतन्त्र की उदारवादी शक्तियों ने इस भयानक विचारधारा का दमन करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है।

6. संगठन व संचालन के तत्व को भी देखना चाहिए। किसी आतंकवादी संगठन का नेता कोई भी हो, किन्तु वह अपने अधीन काम करने वालों को उपक्रम की पूरी छूट देता है। इसीलिए उनके गुट बिखरे होते हैं तथा अपने–अपने तरीकों से काम करते रहते हैं। सर्वोच्च नेता के पकड़े जाने या उसकी हत्या से संगठन के अस्तित्व पर घातक प्रभाव नहीं पड़ता। इसीलिए प्रभुसत्ताधारी राज्य को उनके सारे जाल के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं हो सकती।

इस्लामी कट्टरवाद, साम्यवाद की तरह, एक सशस्त्र सिद्धान्त है। यह एक आक्रामक विचारधारा है, जिसे कट्टरपंथी व सशस्त्र अनुयायी विकसित करते हैं। पाश्चात्य जगत के मूल्यों, जैसे– राष्ट्रवाद, धर्म निर्पेक्षवाद व लोकतन्त्र को इस्लाम–विरोधी कहकर निन्दित किया जाता है। किन्तु यह प्रयास किया जाता है कि प्रौद्योगिक प्रगतियों व आर्थिक समृद्धि को इस्लाम की भौतिक व्यवस्था में मिलाया व उसके अनुकूल बनाया जाए। राष्ट्रवाद सार्वभौम स्तर पर मुस्लिम बन्धुत्व को नकारता है, धर्मनिरर्पेक्षवाद सभी धर्मों को समान भाव या सम्मान देकर इस्लाम का स्तर नीचा करता है तथा लोकतन्त्र ऐसे प्रतिनिधियों को सत्ताधारी बनाता है जो धार्मिक सिद्धान्तों की उपेक्षा करके विधायन व शासन का काम चलाते हैं। आतंकवादियों का मानना है कि ''उनके समक्ष दो ही विकल्प हैं– सारी दुनिया में अपने धर्म को विजयी बनाएँ या शहीद हो जाएँ। 'यदि सारे विश्व में इस्लाम की विजय होती है तो इस पृथ्वी पर स्वर्ग आ जाएगा और तभी अल्लाह का अपने सैनिकों को दिया गया वचन पूर्ण होगा।''

आलोचनात्मक मूल्यांकन (Critical Appreciation) :

निस्सन्देह, आंतकवाद एक अत्यन्त भयंकर परिघटना व विचारधारा है। यह एक अभिप्राय है, जो लोगों को प्रेरित करता है कि वे झूठ, हिंसा,

छल–कपट, द्वेष आदि का सहारा लेकर सदा अग्निपथ पर चलते रहें। यही कारण है कि आतंकवादी निर्मम हत्याएँ करते हैं और स्वयं उसी का शिकार बन जाते हैं। चाहे हिटलर के 'तूफानी दस्ते' हों या माओ के 'लाल रक्षक', सभी ने मानव समाज को गम्भीर क्षति पहुँचाई। ऐसे तर्कहीन व पथमुक्त लोग निर्दोष जनता की हत्या करते हैं तथा उसे अपनी विजय का प्रतीक मानते हैं। वे यह समझना नहीं चाहते है कि पेशेवर तैराकों की जल में ही समाधि बनती हैं।

दुःख एवं चिन्ता की बात है कि अब आतंकवाद ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बना लिया है। इसीलिए, अब राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर चर्चा चल रही है कि इस अभिशाप का कैसे निराकरण किया जाए। सेना व पुलिस के प्रयोग से इस पर काबू पाया जा सकता है, लेकिन उससे ज्यादा जरूरी यह है कि लोगों का मस्तिष्क या उनके सोचने–समझने की शक्ति को सुधारा जाए। युद्ध या संघर्ष के कीटाणु दिमाग में उपजते हैं, अतः लोगों को इस भयंकर विचारधारा से अवगत कराया जाए। अब लोग लोकतन्त्र के प्रबल समर्थक हो गए हैं– ऐसा उद्‌बोधन ही विश्व को आतंकवाद की भयानक विचारधारा के प्रभाव से बचा सकता है। जिन क्रान्तिकारियों ने फ्रांस में रक्तपात किया, वे उसी रक्तपात के शिकार हुए। उदारवाद की विजय फासीवाद व साम्यवाद के अन्त का प्रतीक बनी, अब उसे आतंकवाद के अन्त का प्रतीक बनना है।

जैसा कि इसके नाम से विदित होता है, आतंकवादी विचारधारा में आतंक का फैलाना निहित है, ताकि राज्य के लक्षित अधिकारियों पर दबाव डालकर अपनी माँगों को पूरा कराया जा सके। इसके समर्थक यह मानकर चलते हैं कि शस्त्रों व हिंसा के प्रयोग के बना उन्हें कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। चूँकि वे खुला संघर्ष नहीं कर सकते, अतः वे छापामार तरीकों का प्रयोग करते हैं। अन्धविश्वासी होने के कारण इसके अनुयायी अपने प्राणों की बाजी लगाकर अपने दायित्वों का पालन करते हैं, किन्तु मूल प्रश्न यह है कि इस अभिशाप से कैसे मुक्त हुआ जाए? क्या हिंसा का जबाब हिंसा से दिया जाए या क्या गाँधीजी का अहिंसा का मार्ग कारगर हो सकता है? सैनिक बल आंतकवादी गतिविधियों को रोक सकता है, दोष को जड़ से दूर नहीं कर सकता। अतः इस तरीके को अनुनय–विनय के तरीके से जोड़कर काम करना चाहिए। पुलिस व सैनिक बलों का प्रयोग चलता रहना चाहिए, साथ ही उन समुदायों व सम्प्रदायों के दिलों व दिमागों को जीतने या बदलने का प्रयास भी चलता रहना चाहिए, जो ऐसे आतंकवाद को उत्पन्न व पोषित करते हैं।

REFERENCES

1. Chalmers-Johnson : "Terror' in A.A. Said(ed.) Human Rights and World Order, p. 48.
2. Grant Wadlaw : Political Terrorism, p. 16.
3. The New Encyclopedia Britannia (Ready Reference), Vol. 11, 15th ed. 2006, p. 650.
4. A Heywood : Politics, p. 382.
5. A.M. Scott and others : Insurgency, p. 5.
6. Heywood : op., p. 382.
7. R.A. Freidlander : Terrorism : Inter-Disciplinary Perspectives, p. 36.
8. Youssef Choueiri : 'Islam and Fundamentalism' in Eatwell and Wright (ed. S) : Contemporary Political Ideologies, pp. 255-56.
9. Patrick O' Neil : Essentials of Comparative Politics , p. 229.
10. Youself Choueiri : op. cit., p. 273.

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

ब्राह्मण तथा श्रमण संस्कृतियों का प्रत्यय

डा० अनिलेश कुमार सिंह
दर्शनशास्त्र विभाग
के.जी.के. पी.जी. कालेज, मुरादाबाद।

प्राचीन काल से ही भारतीय विचार–जगत में ऊहापोह रहा है, लोगों की जिज्ञासा उठती रही कि परलोक है या नहीं, मरण के अनन्तर जीव का अस्तित्व होता है या नहीं, कर्म–सिद्धान्त है या नहीं। उपरोक्त प्रश्नों के लिए लोगों में कुतूहल था तथा ब्राह्मण तथा श्रमण दोनों परम्पराओं में इन पर चर्चा होती थी। ब्राह्मण वैदिक थे। ये वेद की प्रामाणिकता को स्वीकार करते थे तो, श्रमण अवैदिक थे, वेद की प्रामाणिकता को अस्वीकार करते थे। श्रमण ने योग को अपनाया, तो ब्राह्मण ने भोग को। ब्राह्मण का लक्ष्य रहा भोग सुख एवं सुविधा, और श्रमण का लक्ष्य रहा त्याग, वैराग्य और विरक्ति। ब्राह्मण के जीवन का लक्ष्य था संसार में रहकर अधिक से अधिक सुख का उपभोग करना, जबकि श्रवण न सब के सुख के उपयोगों से होकर अध्यात्मिक सुख और आध्यात्मिक कल्याण को प्राप्त करने का अपना लक्ष्य बनाया। ब्राह्णवादी चिंतन के सुख की अन्तिम सीमा स्वर्ग तथा श्रमण ने अपने सुख की अन्तिम सीमा को मोक्ष कहा। ब्राह्मण संस्कृति के विकास ने मीमांसा दर्शन, वेदान्त दर्शन, न्याय वैशेषिक दर्शन को जन्मादि बातों से, श्रमण संस्कृति ने जैन दर्शन, बौद्व दर्शन तथा सांख्योग और आजीवन दर्शन को जन्म दिया। ब्राह्मण संस्कृति का लक्ष्य कर्मयोग पर अधिक रहा और श्रमण संस्कृति का ज्ञानयोग अथवा संयास योग पर अधिक लक्ष्य रहा है। ब्राह्मण तथा श्रमण प्रत्यय के बारे में आचार्य नरेन्द्र देव का मानना है कि "ब्राह्मण सांसारिक थे। श्रमण असांसारिक होते थे और ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। ये सत्यान्वेषण के लिए किसी शास्त्र के अधीन होते थे। ब्राह्मण वैदिक धर्म के अनुसार मंत्र, तप, होम, दान, मंगल, प्रत्यार्श्चतादि अनुष्ठान का विधान करते थे। धर्म का रुप बाह्य था, यज्ञों में पशुवध भी होता था, कर्मकाण्ड का प्राधान्य था। इसके विपरीत श्रमण यज्ञ–यज्ञादि क्रिया–कलापों को महत्व नहीं देते थे। इनकी दृष्टि में या तो इनका फल क्षुद्र था या ये निष्प्रयोजनीय थे।"[1]

"ब्राह्मण विचारधारा यज्ञयाग के द्वारा साधक को सांसारिक सुख सामग्री सुलभ कराते थे तो दूसरी ओर श्रमण विचारधारा साधक को उस सामग्री के परित्याग का उपदेश देती थी।"[2]

"श्रमण अवैदिक परम्परा के प्रचारक एवं पृष्ठपोषक थे। वे वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार करते थे तथा यज्ञादि कर्मों का विरोध करते थे। ब्राह्मण वैदिक धर्म के प्रचारक थे और यज्ञ, दान, होम, मांगलिक कृत अनुष्ठानों के प्रचारक थे।"[3]

"In the vedic tradition the source of moral norms is ultimately the vedic

relation, subject to the ultimate authority of the Vedas, the smrtis, the example of the good and the subject's own conscience act as further sources of dharma. In the sramanic tradition the emphasis is on the example and precept of the founding teachers as illustrating the spiritual ideal as available to any one in his own heart."[4]

इसके उपरान्त ब्राह्मण तथा श्रामण के प्रत्यय व उनके गुणों की चर्चा के लिए उनका अलग–अलग अध्ययन प्रांसगिक प्रतीत होता है। सर्वप्रथम ब्राह्मण संस्कृति या परम्परा पर विचार किया, इसके उपरान्त श्रामण पर किया गया है।

ब्राह्मण :

ब्राह्मण शब्द सम्प्रति समाज में एक जाति विशेष के लिए प्रयोग किया जाता है, परन्तु प्राचीन काल में ब्राह्मण शब्द का प्रयोग एक विशेष संस्कृति या पद्धति के लिए किया जाता था।

उस संस्कृति के विवेचन के लिए ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर ब्राह्मण शब्द का प्रयोग हुआ है। ब्राह्मण शब्द ऋग्वेद के निम्न श्लोक में प्रयुक्त है–

यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः सचेतसो यज्ञानि मं वहन्ति।
यो अनूचानो ब्राह्मणो युक्त आसीत्का स्वित्तल यजमानस्य सक्ति।। [5]

इसके अतिरिक्त ऋग्वेद के 10/88/19, 10/90/12 तथा 10/97/22 मंत्रो में ब्राह्मण शब्द का प्रयोग एक वचन में किया गया है। इनमें ब्राह्मण शब्द का अर्थ सायण में (ऋत्विम्लक्षणो विप्र यज्ञ कर्म विशेषे युक्तः) यज्ञ कर्म में दक्ष व्यक्ति के लिए किया है। तै0 सं0 7/1/1–4 में ब्राह्मण शब्द का प्रयोग (औषधि सामर्थ्यज्ञों ब्राह्मणौ वैद्यः) से चिकित्सा करने वाले भिषक का अर्थ ग्रहण किया गया है। कुछ स्थानों पर ब्राह्मण बहुवचन में प्रयुक्त है, जैसे (वेदाविदः मनीषिणः)। ब्राह्मण शब्द से अथर्ववेद में महान ब्रह्म का बोध होता है। इससे ब्रह्म देवता, ब्रह्मवेदिता का अर्थ भी लिया गया है। ब्राह्मण शब्द का प्रयोग– यजुर्वेद, तैत्तिरीय, शतपथ ब्राह्मण में भी मिलता है।

इस प्रकार ब्राह्मण धर्म के अभियान वाले धर्म को हम दो विभिन्न रुपों (धाराओं) में विकसित होता हुआ पाते हैं। प्रथम धर्म वह है, जो ब्राह्मण ग्रन्थों के अध्ययन से लभ्य होता है। धार्मिक उत्सवों की पुस्तक जो कि वैदिक साहित्य का वृहद अंग है। दूसरा रूप उपनिषदों में विकसित हुआ। यह ब्राह्मण धर्म यजुर्वेद संहिता के द्वारा प्रतिपादित धर्म का ही सातत्य रुप है इस कारण यह वैदिक धर्म के अन्तर्गत ही परिगणित होता है।[6]

ब्राह्णाणों की दृष्टि से संसार त्याग नाना लौकिक कर्तव्यों की पूर्ति के बाद युक्त था। इसका वर्णन उत्तराध्ययन से मिलता है–

अहिज्ज वेये परिविस्स विधे युत्तेपरिठप्प गिहंसिजाया।
भोच्याण भोए सह इत्थियाहिं आरण्णमा होह गुणों पसत्थ।। [7]

विनय पिटक में उन्हें कर्मवादी, क्रियावादी और अग्नि के परिचारक बताया गया है[8]

धम्मपद के (ब्राह्मण वग्गो) में ब्राह्मण की परिभाषा दी गयी है– जो तप, ब्रह्मचर्य, संयम और इन्द्रिय दमन जैसे गुणों से युक्त हो। सुत्त निपात्त में ब्राह्मण की परिभाषा बतायी गयी है कि–

त्पेन ब्रह्मचरियेन संयमेन दमेन च।
एतेन ब्राह्मम्णो को होति एंत ब्राह्मण मुत्तमं। [9]

ब्राह्मण को स्पष्ट करते हुए उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि–

जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पई वारिणा।
एवं अलित्तं कामेहिं तं वयं वुम ब्राह्मणे।। [10]

मोनियर विलियम्स कोशकार ने भी कहा है कि– "One has divine knowledge, a man belonging to first three of twice born class and of the original divisions of Hindu body (generally a priest), but of

ten in the present day a layman eng aged in non-priestly occupations although the name is strictly only applicable to one who knows and repeats the Vedas." [11]

ब्राह्मण संस्कृति सामाजिक तथा धार्मिक ऋणों के उत्तरदायित्व को समझती थी और जीवन में आनन्द को महत्व देते हुए उन गुणों आनन्दों की प्राप्ति की कामना से यज्ञ, देवपूजन करके उन्हें प्रसन्न करती थी। ब्राह्मण संस्कृति का लक्ष्य अहं त्वं स्याम् में मानव को दिव्य गुणों से युक्त होकर देवों भूत्वा देवं यजते' का ही स्पष्टीकरण है। ब्राह्मण संस्कृति का प्रारम्भ व्यष्टि जाभ तथा समाप्ति समष्टि लाभ से होता है।[12]

वेदों के याज्ञिक कृत्यों में सकाम यज्ञों का प्राचर्य था। पुरुषार्थ, कर्म तथा देव पर आलम्बन विशिष्ट कर्म थे। परम उपलब्धि अन्य जन्म में देव रूप को प्राप्त करना तथा दुःखों के ज्ञान के द्वारा परित्याग तथा ब्राह्मणत्व प्राप्ति आदि परिगणित लिए जा सकते हैं। गृहस्थ सुख की प्राप्ति के लिए यज्ञों का विधान था। ऋषि जीवन का लक्ष्य एक सम्पन्न सद्गृहस्थी के जीवन की कामना है। अतः यह प्रवृत्ति परक पद्धति ही मानी गयी है।[13]

ऋग्वेद के कुछ श्लोकों से पता चलता है कि ब्राह्मणिक संस्कृति का लक्ष्य देवोपासना द्वारा जागतिक ऐश्वर्य की वस्तुओं की प्राप्ति 'योगक्षेम', स्वस्ति, दिन–रात शुभ रहने की ही प्रार्थनायें बहुलता से लभ्य हैं। ब्राह्मण संस्कृति में "कामभयोज्यं पुरुष पुलुकामोहि मर्त्यः"। मनुष्य में इच्छाओं का बाहुल्य है। देवगणों द्वारा रक्षित का अमंगल नहीं होता है। ब्राह्मण संस्कृति चरमोपलब्धि यद्यपि मानवोत्थान में है किन्तु साथ ही साथ वह राष्ट्र कल्याण की भावना से भी ओत–प्रोत है।

श्रमण :

श्रमण शब्द भारतीय संस्कृति के प्राचीन इतिहास से प्राप्त होता है। इस शब्द का पंथ, सम्प्रदाय, दीन, मजहब आदि संकुचित दीवारों को लांघ कर अपने श्रम से किसी भी लोक–अभ्युदयकारी महान लक्ष्य को प्राप्त करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रयोग हो सकता है। श्रमण शब्द की उत्पत्ति श्रम, सम, षम, धातु से हुई है, अर्थात् श्रमण, समण (समन) तथा शमन ये तीनों शब्द प्राकृत के 'संमण' से बने हैं। इसका अर्थ है परिश्रम, समता तथा शान्ति की त्रिवेणी। वास्तव में श्रमण संस्कृति का सारभूत तत्व इन्हीं तीनों शब्दो में निहित है। प्रथम श्रमण का अभिप्राय है कि व्यक्ति के जीवन का ध्येय परिश्रम है। श्रम किये बिना ही यदि वह समाज का अन्न खाता है, तो पापात्मा है। सुख–दुख तथा उत्थान–पतन के लिए वह स्वयं ही उत्तरदायी है।[13]

जो जैसा काम करता है, उसे उसके लिए स्वयं उत्तरदायी होना है। द्वितीय समन शब्द का अर्थ है– समता अर्थात् सभी को आत्मवत् समझना। समता प्रधान होने के कारण ही यह संस्कृति श्रमण संस्कृति कहलाती है। वह समता मुख्य रुप से तीन बातों में निहारी जा सकती है– समाज विषयक समता का अर्थ है समाज में किसी एक वर्ण का जन्मसिद्ध श्रेष्ठत्व और कनिष्ठत्व न स्वीकार कर गुणकृत या कर्मकृत श्रेष्ठत्व या कनिष्ठत्व माना जाना। साध्य विषयक समता का अर्थ है अभ्युदय का एक सदृश रुप। श्रमण संस्कृति का साध्य एक ऐसा आदर्श है जहां न ऐहिक और न पारलौकिक किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं है। प्राणिजगत के प्रति दृष्टि विषयक समता का अर्थ है– संसार में जितने भी जीव हैं, चाहे मानव हों या पशु–पक्षी या कीट या वनस्पति आदि सभी को आत्मवत् समझना चाहिए।[14]

समन सम शब्द से निष्पन्न है, जिसका वर्णन दर्शवैकालिक नियुक्ति से प्राप्त होता है–

ज हमम न पियं दुक्ख नाणिय एमेव सव्वजी वाणं।
न हणइ न हणाबेइ य सममणई तेष सौ समणो।।[15]

समता किसी भौतिक तत्व का नाम नहीं है, बल्कि मानव–मन की कोमल वृत्ति ही समता, तथा कूर वृत्ति ही विषमता है। समता जीवन, और विषमता मरण। समता धर्म है और विषमता अधर्म।

समता एक दिव्य प्रकाश है और विषमता घोर अंधकार। समता ही श्रमण के विचारों का निचोड़ है।[16]

तृतीय 'शमन' का अर्थ है दमन करना, अर्थात्– मन, वचन और काम पर नियंत्रण रखकर दुष्वृत्तियों और तृष्णा का उच्छेद करना तथा सद्वृत्तियों का विकास करना।[17]

श्रमण अर्थात् मुनि का उल्लेख ऋग्वेद के केशी सूक्त में वातरशन के पुत्र मुनि अतीन्द्रियार्थदर्शी जूति वात जूति आदि के कपिलवर्ण के मलिन वस्त्रधारी तम की महिमा से दीप्त होकर देवस्वरुप होने का वर्णन मिलता है।[18] ऐतरेय ब्राह्मण मं एक ऐतश उन्मत्त, मुनि के रुप में उल्लेख आता है। तैत्तिरीय आरण्यक में श्रमणों को वातरशनाः कहा गया है।[19] उपनिषदों में श्रमण शब्द का सकृत प्रयोग है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है कि सिर मुड़ा लेने से समण नहीं होता, किन्तु समता का आचरण करने से ही समण होता है–

न वि मुण्डिए समणो, न ओंकारेण वम्भणो।
समयाए समणो होइ, वम्भचेरेण वम्भणो।। [20]

सुत्त–निपात के प्रधान सुत में महात्मा बुद्ध ने श्रमण होने के गुणों को बताया है– वासनाओं में मग्न कुछ श्रमण ब्राह्मण (सत्य) को नहीं देखते। वे उस मार्ग को नही जानते, जिस पर सुव्रती चलते है।[21]

भारत की सांस्कृतिक शाखाओं में श्रमण संस्कृति ही केवल ऐसी है, जो केवल विचार में ही उदार नहीं, अपितु आचार में काफी उदात्त एवं दृढ़ रही है।[22] श्रमण परम्परा में चाण्डालों को भी संघ में वही स्थान प्राप्त था जो राजकुमारों को था। किसी भी संस्कृति की उदारता का परिचय उसके साहित्यों की अपेक्षा आचार से अधिक मिलता है। श्रमण संस्कृति में ज्ञान की अपेक्षा चारित्रिक निर्माण पर अधिक बल दिया गया है। श्रमण संस्कृति एक अध्यात्मवादी दर्शन है।[23] उसका लक्ष्य भोग योग की ओर मानव को ले जाना है मनोगत विकारों को पराजित कर।[24]

आत्मविजय की प्रतिष्ठा ही उसका जयघोष रहा है, जिसने अपने आप को नहीं जीता, वह समस्त जगत को जीतकर भी विजेता नहीं कहा सकता। श्रमण दर्शन का यह केन्द्रीय विचार रहा है।[25]

श्रमण संस्कृति अहिंसा प्रधान, कर्म प्रधान तथा पुरुषार्थ प्रधान रही है। श्रमण संस्कृति जीवन की संस्कृति है। श्रमण संस्कृति में व्यक्ति की अपेक्षा गुणों को प्रधानता दी गई है। श्रमणों की दृष्टि में मानव प्रथम रहा। उन्होंने अपने काल में मनुष्य के हित की दृष्टि से लोकभाषा को अपनाया। श्रमण निंरतर विहार या चंकमण शील जीवन जीता था। एक स्थान पर स्थापक होकर नहीं बैठ सकता। श्रमण संस्कृति मानवतावादी चिंतन प्रणाली रही है, जो मानव के आध्यात्मिक और नैतिक विकास को ध्यान में रखकर सभी समस्याओ पर विचार करती है।

ब्राह्मण संस्कृति की चरमोपलब्धि यद्यपि मानवोत्थान में है, किन्तु साथ ही साथ वह राष्ट्र–कल्याण की भावना से भी परिपूर्ण रहा है। जबकि श्रमण संस्कृति व्यक्ति की अपेक्षा गुणों को प्रधानता प्रदान करते हुए मानव के आध्यात्मिक और नैतिक विकास की पक्षधर है।

: सन्दर्भ सूची :

1. आचार्य नरेन्द्र देव– बौद्व धर्म दर्शन पृ0– 1
2. श्रामण, वर्ष 1950, अंक–1, पृ0– 33
3. दर्शनिक त्रैमासिक, अंक– 1–2/1953 पृ0– 88
4. डा0 गोविन्द चन्द्र पाण्डेय– श्रमण ट्रेडिशन, पृ0– 27
5. ऋग्वेद– 8/58/1
6. इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड एथिक्स भाग– 2, पृ0– 797
7. उत्तराध्ययन– 14/9
8. विनयपिटक– महावग्ग– पृ0– 27–34
9. धम्मपद– 26

10. सुत्त निपात्त– 3/9/62
11. उत्तराध्ययन– 25/27
12. मधुवाता–ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माहवीर्नः सन्त्योशधीः मधुनक्मु तोपसो मधुमत्पार्विवं रजः। मधुद्योरस्तुनः पिता मधुमान्नौ वनस्पति मर्घुमां अस्तु सूर्यः। माहवीर्गावोभवन्तुः नः। शन्नो मवः शं वरुणः। ऋग्वेद– 1/90/6, 7, 8, 9
13. ऋग्वेद– 1/9/8, 1/7/10, 1/115/2, 10/17/7
14. डा0 पुण्यमित्र जैन– श्रमण संस्कृति का विकास एवं विस्तार, पृ0– 19
15. देवेन्द्र मुनिशास्त्री– श्रमण संस्कृति का सार, पृ0– 8
16. दशवैकालिक नियुक्ति सूत्र– 154
17. देवेन्द्र मुनि शास्त्री– श्रमण संस्कृति और उसकी प्राचीनता, पृ0– 13
18. मुनयो वातर शनाः विषंगावसतमेजा। वातस्यानु ध्राणि यन्ति यद देवासो अविक्षत।।
19. वैदिक इन्डैक्स– जि0– 2 पृ0– 167
20. तैत्तिरीय उपनिषद्– पृ0– 87, 137–38
21. वही, प्र0– 166
22. उत्तराध्ययन– 25/ 29–30
23. पमाल्हा एत्थनदिस्सान्ति, एकेसमन ब्राह्मण/सुत्त–निपात्त– 1/7/27
24. विजयमुनि शास्त्री– भ्रमण संस्कृति की दार्शनिक पृष्ठभूमि– पृ0– 25
25. दार्शनिक, त्रैमासिक– अंक– 1 वर्ष 1985, पृ0– 1

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

1857 के आलोक में "खल्क खुदा का, मुल्क बादशाह का, हुक्म नवाब महमुद खाँ का" पर एक विहंगम दृष्टि

डॉ. कुलदीप कुमार त्यागी
मेरठ।

बिजनौर जिले में 1857 की क्रान्ति से उत्पन्न भयावह स्थिति को देखते हुए, 3 जून 1857 को जिला मजिस्ट्रेट मि० शैक्सपियर को मुरादाबाद से पत्र द्वारा सूचित किया गया कि वह समस्त यूरोपियन्स सहित तत्काल बिजनौर से पलायन कर जाये। 6 जून को यद्यपि शैक्सपियर ने मेरठ से सहायता मांगी, किन्तु वहाँ की पूर्व में ही जटिल परिस्थितियों के कारण उसकी यह मांग अस्वीकृत कर दी गई। अगले ही दिन 7 जून 1857 को नवाब नजीबाबाद महमूद खाँ एक बार फिर बिजनौर आ पहुँचा। उसके आने से ब्रिटिश दस्तों में संसूचित पठान व अन्य सैनिकों में नवाब के प्रति सहानुभूति के भाव उत्पन्न हो गये थे, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि अब नवाब का शासन आने वाला है। ऐसे में मि० शैक्सपियर ने समस्त यूरोपियन्स सहित बिजनौर जिले से बाहर जाने का निर्णय लिया। यह सत्यता थी कि यदि वे बिजनौर से सुरक्षित न निकल पाते तो शीघ्र ही मार दिये जाते। ऐसी विकटतम परिस्थितियों में वहाँ तैनात सब–ऑर्डिनेट जज (सदर अमीन) सय्यद अहमद खाँ, जिसका प्रभाव नवाब महमूद खाँ पर भी काफी था, ने नवाब को इसके लिए राजी कर लिया कि नवाब स्वयं इस उपद्रव से दूर रहे। नवाब बाहरी रूप से यह प्रदर्शित कर रहा था कि बिजनौर आने का उसका उद्देश्य अंग्रेजों की सहायता करना है।

7 जून 1857 को सायंकाल चौधरी ताजपुर प्रताप सिंह को उसी दिन के लिखे पत्र मिले, जिनमें बरेली के खान बहादुर खाँ द्वारा की गई ब्रिटिश विरोधी कार्यवाहियों का उल्लेख था। यह पत्र चौधरी ताजपुर ने मि० शैक्सपियर को दिखाये। नवाब महमूद खाँ को भी बरेली व मुरादाबाद में ब्रिटिश विरोधी कार्यवाहियों की सूचना मिल चुकी थी, जिसने नवाब के मन में अपना शासन स्थापित करने की लालसा को जन्म दिया। इससे उत्साहित नवाब ने रात्रि को ही विप्लव की योजना बनाई। इसका संकेत इस बात से मिलता है कि उसी दिन शैक्यपियर के दो बार बुलावे पर भी नवाब उपस्थित नहीं हुआ था। शैक्सपियर समझ चुका था कि उस रात ही बिजनौर के समक्ष यूरोपियन्स की हत्या कर खाजने को हस्तगत करना नवाब की प्रमुख विप्लवी योजना थी। इस स्थिति में मि० शैक्सपियर ने अपने सदर अमीन सय्यद अहमद खाँ को नवाब के पास भेजा, उसने नवाब को आश्वस्त कर दिया कि खजाना बिजनौर से बाहर नहीं भिजवाया जा रहा था। उसी दिन 29वीं देशी पैदल सेना के क्रान्तिकारी सैनिक दो तोपों के साथ खजाना हस्तगत करने के लिए मुरादाबाद से बिजनौर आ पहुँचे। वे उसी रात खजाना लूटने के लिए प्रतिबद्ध

थे। इन भयावह परिस्थितियों में समाधान निकालने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों ने मंत्रणाएं कीं। अंततः निर्णय लिया कि यूरोपियन स्त्री व बच्चों को तत्काल रात्रि में ही जिले से बाहर सुरक्षित भेज दें और पुरूष वर्ग उनके पीछे जिला छोड़ दे। किन्तु रास्ते में अनहोनी की आशंका से बचने के लिए इस सम्बन्ध में नवाब महमूद खाँ से परामर्श करना उचित समझा गया और इस दुरूह कार्य के लिए एक बार फिर सय्यद अहमद खाँ की सेवाएं ली गईं। सय्यद अहमद खाँ ने नवाब से मुलाकात कर उसे इस बात के लिए तैयार कर लिया कि नवाब को गलत काम में अपना नाम नहीं जोड़ना चाहिए। नवाब का शुभचिंतक बनते हुए उसने नवाब को विश्वास दिलाया कि एक–दो दिन में जब यूरोपियन जिले से बाहर चले जायेंगे, तो वही जिले का मालिक होगा। नवाब उसके इस तर्क से प्रभावित तो हुआ, किन्तु उसने विचार प्रकट किया कि–

"यदि ब्रिटिश अधिकारी बिजनौर से जाने वाले थे, तो उसी रात को चले जाते, अन्यथा उनमें से कुछ की हत्या हो सकती थी।"

क्योंकि अफगान सैनिकों पर नवाब का नियंत्रण नहीं था। इस वार्ता की सूचना सय्यद अहमद खाँ ने मि० शैक्सपियर को दी। अब उस भारतीय के नाम पर विचार किया गया, जिसे जिले की कमान सौंपी जाये। शैक्सपियर ने हल्दौर व ताजपुर के चौधरियों को भी जिले की कमान सौंपने का प्रस्ताव रखा, किन्तु तत्कालीन परिस्थितियों ने उन दोनों चौधरियों ने अपनी असमर्थता व्यक्त की। अंततः शैक्सपियर ने नवाब को ही कमान सौंपने का निश्चय किया। इस समय रात्रि का एक बज रहा था अर्थात् 8 जून की तारीख प्रारम्भ हो चुकी थी। रात्रि दो बजे मि० शैक्सपियर ने नवाब महमूद खाँ को जिले का चार्ज लेने के लिए निमंत्रित किया। महमूद खाँ रात के दो बजे कलक्ट्रेट आवास पर जिले का चार्ज लेने आ पहुँचा। शैक्सपियर ने नवाब को एक कागज पर लिखकर जिले का चार्ज हस्तांतरित कर दिया, जिसमें शैक्सपियर ने अपने आने तक सार्वजनिक व निजी सम्पत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी नवाब को दी थी। राजस्व एकत्र करने का अधिकार न देते हुए खजाना से आवश्यकतानुसार धन व्यय करने की पूर्ण स्वतंत्रता नवाब को थी। उसने नवाब को यह भी सूचित किया कि वह नदी पार अपनी पत्नी व अन्य यरोपियन्स से मिलने जा रहा है, और दस दिन से अधिक अनुपस्थित नहीं रहेगा।

इसके पश्चात् प्रातः 3 बजे कलैक्टर मि० शैक्सपियर, उसकी सहायता के लिए बरेली से आया। रिसालदार कुतुबुद्दीन व कुछ अन्य निजी घुड़सवारों के साथ, श्रीमती शैक्सपियर उनका बच्चा, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट व डिप्टी कलैक्टर मि० पॉमर, सिविल सर्जन डॉ० नाइट, श्रीमती नाइट, मि० राबर्ट क्यूरी, मि० लेमेस्टर हैड क्लर्क, श्रीमती लेमेस्टर उनके तीन बच्चे, क्लर्क मि० जानसन, मि० मर्फी, श्रीमती मर्फी, उनके चार बच्चे, मि० कैबूड़ के साथ गंगा की ओर चले। ये रात्रि समाप्त होने से पूर्व ही अपने गंतव्य तक पहुँचना चाहते थे, किन्तु अकस्मात हुए उनके प्रस्थान के कारण गंगा पर नावों का कोई प्रबन्ध न था। गंगा पार करने में ही लगभग 8–10 घंटे लगे। जून की तपती धूप और गर्म रेत में बिना विशेष प्रबन्ध के की जा रही यह यात्रा इतनी कष्टकारी सिद्ध हुई कि वे शाम तक मुजफ्फरनगर ही पहुँचे सके। बेहाल स्थिति में 9 जून को एक दिन के लिए इन सभी ने मुजफ्फरनगर में ही आराम किया। 10 जून की प्रातः वे सभी मुजफ्फरनगर से रुड़की के लिए चले। चौथी इर्रेग्युलर कैवलरी दस्ते के 12 सवारों को भी उन्होंने अपने साथ ले लिया। यह दस्ता एडमटैण्ट लैफ्टिनेण्ट स्मिथ की कमान में मुजफ्फरनगर में तैनात था। अंततः यह दल 11 जून की रात सुरक्षित रुड़की जा पहुँचा।

उधर 8 जून 1857 की प्रभात वेला बिजनौर जिले के लिए एक विशेष संदेहवाहक सिद्ध हुई। लगभग 156 वर्षों में इस भूखण्ड पर एक बार फिर

रूहेलों का प्रशासन स्थापित–सा हो गया। भोर में ढोल की थाप पर ये स्वर सुनाई दिये–

"खल्क खुदा का – मुल्क बादशाह का – हुक्म नवाब महमूद का"

अगले दिन 9 जून से जेल में नवाब के विश्वस्त गार्ड रामस्वरूप की देखरेख में विप्लवी सैनिकों की भर्ती शुरू हुई। रामस्वरूप को इस भर्ती का सर्वेसर्वा बनाया गया। जिले का नया प्रशासन भी 9 जून 1857 से ही अस्तित्व में आया। ठाकुरद्वारा के मुंसिफ अजमतउल्लाह को पेशदस्त नियुक्त किया। अपने निकटवर्ती रिश्तेदार अहमदउल्लाह को उपप्रशासक बनाया गया। राजस्व और न्यायालय पर इसी का प्रभाव था। शफीउल्लाह को नजीबाबाद का तहसीलदार बनाया गया, जोकि नवाब का भतीजा था। अहमदयार खाँ उर्फ कल्लन प्रधान सेनापति और हबीबुल्ला खाँ को बख्शी नियुक्त किया। कलैक्ट्रेट के समाने छप्पर डालकर बैरकें बनाई गईं। बिजनौर में यूरोपियन अधिकारियों के घरों ओर कार्यालयों में जो भी फर्नीचर था, वह सभी नजीबाबाद भिजवा दिया गया। नवाब का सर्वप्रथम कार्य खजाने को नजीबाबाद भिजवाना था। तत्पश्चात् उसने जागीरदार का विरोध करना प्रारम्भ किया। नवाब के मंतव्य को समझकर बिजनौर के रईस चौधरी नैन सिंह व चौधरी बुद्ध सिंह ने उसका विरोध करना उचित समझा। हजारों की संख्या में समर्थक ग्रामीण उनके यहाँ एकत्र हो गये। नवाब को इसका भान हुआ तथा उसने मामले को सुलझाना चाहा। इस पर दोनों चौधरी एक शाम नवाब से वार्तालाप करने उसके आवास पर गये, किन्तु भेंट न हो सकी। 23 जून 1857 को अहमदउल्ला खाँ और दोनों चौधरियों के मध्य कचहरी में लम्बा विचार–विमार्श हुआ। अंततः दोनों पक्षों के बीच समझौता हो गया। अहमदउल्ला खाँ और नवाब महमूद खाँ ने कुरान पर हाथ रखकर कसमें खाईं। दोनों चौधरियों ने गंगाजल हाथ में लेकर शपथ ली। इस प्रकार शान्ति स्थापित हो गई। 18 जुलाई 1857 नवाब ने 80 तोले वजन वाले नये सेर को समाप्त कर दिया, क्योंकि यह अंग्रेजी राज्य का द्योतक था। उसने सौ तोले वाले पुराने सेर का ही पुनः प्रचलन शुरू किया और उसी पर शाही मोहर लगवा दी। दूसरी ओर 13 जुलाई को अहमदउल्ला खाँ नजीबाबाद से चलकर नगीना जा पहुँचा। यहाँ से अगले दिन वह धामपुर आया। यहाँ हिन्दू–मुसलमानों, सभी ने उसका स्वागत किया। 19 जुलाई को शेरकोट के चौधरीगण उसके प्रति सम्मान व्यक्त करने धामपुर आये। दूसरी ओर अमदूखान, जो कि नवाब महमूद खाँ का सेवक था, अंग्रेजो के जिला छोड़कर चले जाने के पश्चात् दिल्ली से मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर के द्वारा नवाब महमूद खाँ के नाम जारी शाही हुकुमनामा लेकर बिजनौर लौटा, जिसके आधार पर नवाब ने स्वयं को मुगल बादशाह का इस भूखण्ड का वैध प्रतिनिधि घोषित कर दिया था।

: सन्दर्भ सूची :

1. Freedom Struggle in Uttar Pradesh, Vol. 5, P. 249-S.A.A. Rizvi.
2. रिसाले असबास–ए–हिन्द 1858, इंग्लिश ट्रान्सलेशन बाय ग्राह्म एण्ड कोलविन, बनारस।
3. Asar us Sanadid, New Delhi, 1990.
4. The causes of the Indian Revolt, Translated into English by his Two English friends, Benares, 1873 (reprint edition introduced by Francis Robinson, Karachi,. 2000).
5. History of Bijnor Rebellion (Tr. With notes and introduction by Hafeez Malik and Morris Dembo). Delhi, Idarah-i-Adabiyal-I, Delhi, 1982.
6. Asbabe-e-Sarkashi-e-Hindustan (An Eassy on the Causes of the Indian Revolt), Agra 1859.
7. History of the Bijnor, P.22, 23, Sr. Sayyad Ahamad Khan.
8. The Revolt of 1857 in Bijnor- P.105- Ritu Singh.
9. Letter No.106 (24th)
10. District Gazetteers, Bijnor - 1968, P.47

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

LACK OF VALUES AND MORAL DEGRADATION IN MODERN YOUTH : ACT NOW TO SAFEGUARD THE FUTURE

Dr. Prabha Sharma
Associate Prof, Sociology Deptt.
Govt. Girls (P.G.)College, Rampur

Ms. Swati Bhardwaj
Research Scholar
Govt. Girls (P.G.)College, Rampur

Introduction:

There is a maddening pursuit to accumulate, wealth, power and status to the total exclusion of humanness in us. This trend of decline in human values does pose serious threat to the future course of development of the country but even for its survival, respect and authority itself. Though, change in social/ human values in younger generation is inevitable with time but the decline in Indian generation is at an alarming rate as compared to any other country all over the world. It devolves on the parents, teachers and society to imbibe the desired human values in the younger generation. In the real life situation we are swayed by narrow parochial considerations and there the situation is marked by violence, greed, thefts, drug addiction and terrorism etc. Our institutions of learning are preparing efficient individuals, but not good citizens or humans. Thus it has been commonly believed that there has been a rapid erosion of ethical and moral values in Indian society.

The present educational system with all its complexities and intricacies has proved to be deficient in so far as it neglects or does not give the deserving importance to values in human life. Thus human sufferings and sorrows are forever on the increase in spite of the phenomenal explosion of knowledge values have become the neglected lot in the current educational system and consequently the maxim "education change the man" has almost lost its "values".

Education without values is crime; education without mission is life burden. Education in our life enables us to become comfortable and to look after our family well out so far as the social progress is concerned, value based education is need of the hour for this purpose value based education and morals have become indispensable.

Definition of Value:

The values are truth, Right Action, Peace, Love and Non-Violence; these human values should be deemed as the fivefold breaths or panchparanas. Since the values constitute the life breaths one who does not radiate the values in his actions is deemed to be lifeless.

This concept indicates that life is like a flowing river in which water of Artha and Karma is continuously flowing with constant changes but it must be protected and controlled by its banks, Dharma and Moksha. Wealth and enjoyment must not break the banks by their flooded state. If it is done the whole life will be

scattered. Today we all are facing a very crucial life with all the tensions and worries as we all are running after materialistic life.

What are Morals?:

They are acceptable standard of general conduct or behavior by an average person or the society at large.

Moral degradation of youth is an important problem of emerging India. Morality is about the appropriateness of goodness of what a person does, think or feel. Morality helps one to make right moral judgment and thus present acceptable behavior. Youth power is the driving force of a nation; if it moves in right direction. But now a day is adversely diverted through different immoral activities which does not only influence the present Indian society but also it stimulates the future generation of our civilization. Therefore, it is imperative and a duty of everybody to find out the solution of this crucial problem to establish India in the world of peace and harmony that very much depends on the hands of young generation.

Morality originates from the latin word 'moralitas' refers to "manner, character, proper behavior" which differentiates intentions, decisions and actions between those that are good or bad. They are acceptable standard of general conduct or behavior when judged by an average person or the society at large. Morality plays a healthy synthesis between people, co-operate each other in a harmonic manner, understand the right or wrong differentiation makes a value based society. Moral values reduce social problems like unrest, social erosion, crime, separatism, class conflict, isolation, lack of well being and after all collective distance.

There are innumerable causes of lack of values and moral degradation amongst our youths. Few of them are discussed below:

Parents: Parents behavior affects the child's personality, character and is also responsible for instilling moral values in them. Today educated and not educated parents gives more concerned with their children's academic achievement than cultural, traditional and above all right morals and values.

Working parents fails to inculcate discipline in their children, endow their children with less emotional attention, make few demands on their children for better behavior and allow them to regulate their own activities; are the ones who end up raising the moral flawed and value less children.

Now days the control of parents has been decreasing from the children this autonomous life has become fashion among today's youth. Consequently the youth are being diverted by external force and engage themselves in night club, rocking, unwanted discussions and so many undesirable affairs. This sort of isolation, lack of love and affection from family has been endangering and spoiling their lives resulting unrest and agitation.

Defective education system: After more than 60 years of India independence, there is lack of proper education infrastructure, essential elements from which youth can learn properly. The British system of education that we have adopted gives Indian children the impression that traditional Indian culture and values need to be despised for they are impractical, archaic and superstitious. The present system of education teaches children to be more materialistic and worldly rather than socialistic and spiritualism. Education is becoming professional which never teach moral perspectives of education. This sort of educational deprivation has created crisis of employment that have been raising agitation. According to Dr. Martin Luther King "we must remember that the intelligence is not enough. Intelligence plus character- that is the goal of true education.

Mass Media Influence:

Undoubtedly TV, print media, internet blogs and websites, cinemas, role models play an important role in honing and shaping the personality of the youth. Many media images, movies and games that not only neutralize violence but often glorify it there is so much violence, vulgarity in all these entertainment avenues and if a majority of youth watches thee, the impact of the same on the next generation can't be positive.

Attraction of change:

Advent of modernization has spread over the younger generation of the society. Consequently our youth have disassociated themselves from their own identity, tradition and cultural heritage.

Desire of self- exhibition:

Adolescence is a time period when youth begin to analyze issues, develop view points, rationalize, question the status quo, rebel and struggle to develop a personality of their own. Desire of self- exhibition often takes a youth towards crime and immoral behavior like smoking, drinking, delivering abusing words, quarreling, sex abuse etc.

Dirty politics:

Most of the political parties have a tendency to capture youth to strengthen and developed their structure. All the political parties have been fulfilling their own interest by involving them into different movements with the assurance of employment and numerous greed and promises. Being inspired by those, the youth is being adversely affected and the society is being polluted by an unstable situation.

"Consequences of weak values and moral degradation:

If the younger generation becomes violent, impatient and intolerant it can breakdown social harmony as well as national integration, which in return will stunt the growth and progress of the country. The creative mind of youth towards unsocial activities will give rise to law breakers and a country with chaotic and dark future.

Fixing the responsibility:

Life has become so busy now that man has 'no time to wait and see'. He cannot even enjoy a leisurely breath. As s a result, joint family system has deteriorated; people seem to have adopted false and wrong notions regarding social prestige; the young are compelled to take breath-taking competitions; more and more people have fallen to bad habits. There was a time when the need of value education was fulfilled at least to some extent by the joint family system itself, but now that system has been totally eclipsed, the schools and colleges are required to play an important and significant role in the matter of moral and value education. It is the historical need of the hour that education has to bear the cross for the well- being of mankind, 'Education must come forward as the savior of mankind.'

REFERENCES

1. Ahuja.R (2009): "Social Problems in India"Rawat Publication, New Delhi
2. Madan .G.R. (2009) Vol-1, Allied Publishers Pvt. Ltd, New Delhi
3. Chilkars, M.G. (2003) "Education and Human Values"
4. Sharma R.A. (2005) "Philosphical Problem of Education"Surya Publication, Meerut
5. Mohan. D. (1980): "Drug Abuse In Indian Streams Research Journal India", A.I.I.MS. New Delhi
6. Kaushik Kumari Vijya, (1997) " Education and Social Change", Anmol Publications. Delhi
7. Gupta. P, and Gupta M.D. (1997) "The Bhagwad Gita", Dreamland Publications, New Delhi
8. http://www. Moral Values Amongst Young Generation

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

RUSKIN BOND AND HIS FICTIONAL WORLD

Dr. Sandeep K. Gupta
Assistant Prof. (English)
Govt. Degree College, Bhojpur
Moradabad (U.P.)

Ruskin Bond is popularly acknowledged as one of the best short story writers and novelists for Children. He wrote essays, travel writings, poetry, songs, love poems and novels. As a novelist he got name & fame. He has written over hundred short stories, essays and novels and more than thirty books for children. He wrote his first memoir In Scenes From A Writer's View, recounting his formative years. In his memoir, he describes a lovely collection of photographs, events, people and places in the eventful journey of his life. He writes :

His first novel "The Room On The Roof, first took shape in England, the land of his forefathers, where he was sent to make a career for himself in the field of writing. His first steps into this arena were marked by a lot of enthusian and his spirits. He writes about this phase in his 'memoir' that- "....School behind me, I was all set to launch myself in the world as a writer. All glory comes from daring to begin..."

Scenes from a Writer's Life : A Memoir, 78

Children occupy important and significant roles in most of his novels. The Central character of the Room On The Roof, is a seventeen year old Anglo Indian boy by the name of Rusty, A teenager. He is a teen ager swinging between the extremes of childhood on one hand and that of adulthood on the other. Rusty makes friends with many local boys of Dehradoon for Doon Valley is the setting of this novel. The entire novel evolves around these youngesters, the only adult of importance being Mrs. Kapoor with whom Rusty falls in love.

In the novel An Axe For The Rani, the most crucial and important character in Murder mystery, is Kamla, a girl of twelve or thirteen. The whole mystery revolves around her. Her character is surrounded in mystery and ultimately she is the one who holds the key to solve the murder mystery. The presence of inspector Keemal Lal is very prominent throughout. Though he is middle aged yet he has some child like traits and a basic innocence that generally we do not accociate with grownups. He does not seem to be a policeman. There is no denying the fact, that the friendship grows between Kamla and Keemat. Slowly and slowly, Kamla reveals to him the whole truth. She discloses to Keemat all about the Rani being a procuress for the wealthy business man Dalip Singh. The Rani introduces the innocent and

unsespecting child Kamla to him. She is terrified by the advances and resists. Kamla reveals the truth about the whole mystry of murder, thereby solving the identity of the murderer.

Keemat Lal happens to learn a lot in this case and actually matures as a person. He realises that law is not fool proof. Keemat Lal's career depends on his solving the case but his humanity, ethics and morality win in the end. His final judgement is fair to the culprit and it is a victory of human valves over the mundane corsideration of promotion.

Ruskin Bond's world has an abundance of children. In the novel Love Is A Sad Song, the narrater himself plays the leading part. He is thirty years old and mentally just a teenager, a dreamer. He falls in love with Sushila, a school girl half of his age. She is wiser than him in many ways. She is very practical and mature in her outlook. She accepts the man, her family has chosen for her as husband. Meanwhile, the narrator has grown up and has natured ultimately to find and accept the truth that he has lost Sushila for good. Both Characters have matured in their own way and in their own different direction, one by getting married and the other by remaining unmarried.

Like Girish Kannad, Ruskin Bond wrote historical novel, A Flight of Pigeons. It is a different story setting Shahjahanpur during the revolt of 1857. It is a haunting and beautiful love story. The whole story moves round the Character of Ruth Lavadoor, the daughter of an English clerk working in British Magistrate Office. She is a teenager, 13 years old, just out of her school. She is caught in turmoul of conflicting emotions where her father is killed in an attack by Sepoys. Her family seeks refuge with their trusted family friend Lala Ramji Lal from where they hope to escape to their relatives in Bareilly. But their plans are spoiled by the interference of Javed Khan fiery pathan opposed to the British. He abducts Ruth and her mother and takes them to his Haveli. They terribly scared of the consequences, but to their surprise, it is not hate which has made him commit this act of abduction but almost a crippling passion for Ruth.

Ruskin Bond gives the personal touch in the setting of this novel and commants :

The records shows that my father was born in shahjahanpur, a small cantonment town which conincidently became the setting for my novella.

[A Flight of Pigeons Scene, 17]

Vagrents in the Valley is replate with personal touches. It traces the life of Rusty, an Anglo Indian boy who in the company of his Indian friend Kishen, undertakes many adventures. The places described are Dehradoon, Hrishikesh, Haridwar and the various hilly Villages, a favourite haunt of Bond. All his characters are Indian. He reveals his complete understanding and familiarity with all of them. The novel ends on the note of uncertainly as Rusty leaves India for Britain.

The novels are generally set in the hill station of Mussoori or the small but beutiful town of Dehradoon, with the exception of A Flight of Pigeons that has its setting in the busy and small town of Shahjahanpur. The mention of Delhi is to be found in two of his novels, though the basic setting remains Mussoorie and Dehra Doon But this was quite natural for him because he had spent most of his life in this part of the country. He was not familiar with other parts of the country to have described them with suck case and confidence. He is a lover of his surroundings. The natural wealth of plants and animals to be found in abundance in these parts of India. To him India was no ordinary country. It had a special importance and place in his life. According to him :

"India is an atmosphere as much as it is a land"

[Vagrants in the Valley, Scenes, XV]

He is all praise for the lonely nature that is present all around him in India-

Mountains, Vallays, fields and forests which had made an indelible impression on my mind.

(Vagrants in the Valley, Scenes, XV)

He even fell in love with not only the varrious sounds, melodies of different birds, animals and human beings but also with the dirt the filth and the heat and dust of India. They were quite soothing and lovely for him:

Every where noise and lights and smells; and smoke and dust; and filth and beauty. Oh- India, my India for all your dust there is a blossom

(Vagrants in the Valley, Scenes, 124)

He further recollects his thoughts and deep attachment with India, while he was away from the country he loved so passionately. He states :

It was while I was living in Jersey in the channel Island that I really missed India.

(Vagrants in the Valley, Scenes, 131)

He realized to his uttar amazement that:-

Even though I had grown up with a love for the English language and its literature, even though my forefathers were British, Britain was not really my place. I did not belong to the bright lights of Piccadily and Leicester square or for that, matter to the apple orchards of kent or the strawberry fields of Berkshira. I belonged, very finally to peepal trees and mango groves, to sleepy little towns all over India...

Human contact! That was what I missed most... For in India there are no strongers...

(Vagrants in the Valley, Scenes, 154-55)

The personal elements are spread all over his writings and the novels are no different on that score. They have the visions and experience of a young boy, who had travelled the length and breadth of India, in the course of his childhood. The places that he made his home and the people that he befriended and came close to in the wake of his changing circumstances and the twists and turns of his young impressionable life and its thoughts. All these experiences, both bitter and sweet, find a mention throughout the world of his writing.

The critics dismiss him as a writer of short stories, that too with a vein of personal touch running throughout, littele realising the fact that childhood memories are the strong foundation of our childhood.

Ruskin Bond had rather very strong feeling about his memories. The deep impact of his feelings, emotions and experiences can be seen, felt and read throughout his fiction. All his Dehra- Doon friends find a place in his first novel The Room on the Roof and then in The Vegrants in the Vally. The central characters generally of his novels are teenagers and youngesters because he confesses his partially towards them and finds nothing very fascinating and appealing in the life of the grown- ups.

According to him :

To love and be loved is the greatest happiness... Men and women leave the age of childhood behind, and are so busy with their buying and selling, their ambitions and their hopes, their loves and their hates, that they forget they once lived in a land where dreams were real. I will not forget my childhood, I shall not surrender it.

(The Vagrants in the Valley, Scenes, 130)

Thus it can be said that throughout his work of fiction, one thing that stands out very lucialy is his love of everything Indian. He might have been born to English parents but his love and attachments the country of his birth is immense. Its lovely and dirty scenes as well as sites attract him and his deep rooted emotions and feelings with his Indian friends are heart touching. Through his writing he pays his homage to the country of his birth and he pays his tribute to the various friends, who made his life rich and complete.

Work Cited

Bond, Ruskin, The Room on the Roof, New Delhi : Penguin Books India (P) Ltd., 1993.

Bond, Ruskin, A Season of Ghosts, New Delhi : Penguin Books India (P) Ltd., 1999.

Bond, Ruskin, A Flight of Pigeons, New Delhi : Penguin Books India (P) Ltd., 2002.

Bond, Ruskin, Vagrants in the Vally, New Delhi : Penguin Books India (P) Ltd., 1994.

Bond, Ruskin, Delhi is not Far, New Delhi : Penguin Books India (P) Ltd., 1994.

Bond, Ruskin, Scenes From a Writer's Life : A memoir, New Delhi : Penguin Books India (P) Ltd., 1997.

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

भारतीय संविधान में संसदीय लोकतंत्र

डॉ. हेमा राघव
C/o. श्री हर्ष वर्धन
एम.ए., पीएच.डी., राजनीति विज्ञान
म.ज्यो. फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)

संसद के माध्यम से संविधान के जो प्रावधान लागू हुए हैं, उनसे परिवर्तन की लहर के कारण अपेक्षाकृत रूप में चहुंमुखी विकास संभव हो सका है। यही विकास परिवर्तन के रूप में अंकित किया गया है। इस परिवर्तन में कुछ बातें जरूरी होती हैं, ''सामाजिक बदलाव लोगों के जीवन की भौतिक तथा आर्थिक स्थिति को उन्नत बना देता है। आधुनिक नवीन तकनीकी के संबन्ध में मानवीय दृष्टिकोण में तार्किकता, परानुभूति, गत्यात्मकता, नवीनता की चाह, अधिकाधिक भागीदारी तथा व्यापक संदृष्टि सरीखे गुणों के फलीभूत होने के लिए मनुष्य की केवल सोच और इसके नजरिये में ही बदलाव होना जरूरी नहीं, बल्कि मूल्य व्यवस्था में भी बदलाव होना नितांत अपरिहार्य होता है। इस तरह पता चलता है कि बदलाव के लिए जरूरी है- मानवीय दृष्टिकोण के प्रतिमान के साथ मूल्य व्यवस्था का आधुनिक होना। मानव क्षमता व गुण के अधिकतम उपयोग तथा विकास कार्यक्रमों में अधिकाधिक लोगों की भागीदारी के लिए सामाजिक संरचना में परिवर्तन, जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे पर आधारित सामाजिक न्याय की स्थापना में सहायक हो, से बदलाव प्रक्रिया सकारात्मक रहती है।''[1]

वस्तुतः मौलिक अधिकारों की घोषणा तभी सार्थक हुई है, जब इनके परिवर्तन के लिए सक्रिय साधन उपलब्ध हुए हैं। अधिकारों का अस्तित्व ही उपचारों पर आधारित है और उपचार ही किसी अधिकार को यथार्थता प्रदान करता है। संसद उपचार करने की ही एक संस्था है। प्रदीप त्रिपाठी के अनुसार-

"इंग्लिश कामन लॉ का यह सर्वमान्य सिद्धांत है कि जहाँ विधिक अधिकार हैं, वहीं राज्य द्वारा विधिक उपचारों की व्यवस्था की जाती है। इंग्लैण्ड में इन अधिकारों को 'परमादेश' आदेशों के माध्यम से सुरक्षित किया गया है। अमेरिकी संविधान में नागरिकों के मूल अधिकारों की सुरक्षा के लिए कामन लॉ में प्रचलित रिटों को वहां की संवैधानिक व्यवस्था में स्वीकारोक्ति प्रदान की गयी है। हमारे संविधान में मूल अधिकारों के अतिक्रमण पर उन्हें प्रवर्तित कराने के लिए सांवैधानिक उपचार उपलब्ध कराये गये हैं। अनुच्छेद 32, जो संवैधानिक उपचार का अधिकार देता है, संविधान के भाग तीन में होने के कारण स्वयं एक मौलिक अधिकार है। अनुच्छेद 32 के अधीन उच्चतम न्यायालय और अनुच्छेद 226 के अधीन उच्च न्यायालयों द्वारा मूल अधिकारों के परिवर्तन की व्यवस्था की गयी है।"

डॉ0 वसु ने कहा है कि ''संविधान में मूल अधिकारों की अमूर्त घोषणाएं निरर्थक हैं, जब तक कि

उन्हें प्रभावी करने के साधन न हों। सभी देशों के सांविधानिक अनुभव से यह प्रकट होता है कि इन अधिकारों की सिद्धांतता का परीक्षण न्यायालयों में ही होता है। अधिकारों के अनुपालन को प्रवृत्त करने की न्यायालयों की शक्ति न्यायपालिका की निष्पक्षता और स्वतंत्रता पर ही नहीं, इस बात पर भी निर्भर करती है कि कार्यपालिका या अन्य प्राधिकारियों से अनुपालन कराने के लिए उनके पास कितने प्रभावी उपकरण हैं।''[2]

संविधान के इन प्रावधानों के द्वारा परिवर्तन होना स्वाभाविक है। आजादी की प्राप्ति के बाद संसद के माध्यम से सांविधानिक प्रावधानों के द्वारा जो अधिकार नागरिकों को प्राप्त हुए हैं, वे विकास की सीढ़ियां बने हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन के काल में ही विकास और लोगों के पुनर्वास से संबन्धित चर्चाएं होने लगी थीं। विकास की गति में तीव्रता लाने के लिए सभी एकजुट थे। ध्यान यह भी रखा जा रहा था कि संसदीय प्रावधानों के द्वारा मिलने वाला लाभ मात्र कुछ लोगों तक ही सिमट कर न रह जाए, बल्कि उसे आम आदमी और प्रत्येक आदमी तक पहुंचना चाहिए। उसके लिए जो रणनीति तैयार की गयी थी, उसको चार दिशाओं की तरफ लक्षित किया गया था। प्रथम अर्थव्यवस्था का आयातों और विदेशी सहायता पर आश्रित न होकर स्वतंत्र विकास अर्थात 'आत्मनिर्भर वृद्धि'। द्वितीय, बचत और निवेश की दर बढ़ाने के लिए संसाधनों को गतिशील बनाना और पूंजी संचयन अर्थात 'उच्च वृद्धि दर'। तृतीय, क्षेत्रीय और सामाजिक असमानता में कमी करना, यानि 'गुणवत्ता का लक्ष्य'। और चतुर्थ, जीवन निर्वाह और जीने के लिए न्यूनतम सुविधाएं उपलब्ध कराना, जिसका अर्थ है 'समानता और न्याय'।

इस औद्योगिक नीति के अन्तर्गत हथियार और गोला-बारूद, परमाणु उर्जा और रेलवे के निर्माण इत्यादि के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार की स्थापना पर जोर दिया गया है। कोयला, लोहा और इस्पात, धातुओं, पोत-निर्माण, हवाई जहाजों, टेलीफोन एवं टेलीग्राफ के उपकरणों के निर्माण के लिए उद्यमों को प्रारम्भ करने हेतु सरकार के पास विशेष अधिकारों को सुरक्षित रखा गया। इस प्रकार के प्रयास आर्थिक क्षेत्र में बदलाव के लिए बुनियादी ईंटों के रूप में सिद्ध हुए। यह परिवर्तन इसलिए और भी ज्यादा कारगर सिद्ध हुए, क्योंकि आवश्यकता होने पर राष्ट्रीय हित साधना में निजी क्षेत्र से सहयोग प्राप्ति की छूट भी रखी गयी और- ''इसी के साथ-साथ व्यापारिक समुदाय को यह आश्वासन भी दिया गया कि नए स्थापित किये जाने वाले उद्योगों का कम से कम दस वर्श तक राष्ट्रीयकरण नहीं किया जाएगा। सरकारों की तरफ से विदेशी कम्पनियों को भी आश्वासन दिया गया कि वे भारतीय उद्योगों पर लागू शर्तों के अन्तर्गत ही भारत में अपना व्यापार जारी रख सकती हैं। बड़े व्यापारिक घरानों की शक्ति को कम करने का कोई प्रावधान भी नहीं किया गया। इसके सापेक्ष अतिरिक्त पूंजी निवेश आकर्षित करने के लिए ब्रिटेन की व्यापारिक कंपनियों और फर्मों से व्यापारिक चर्चाओं को जारी किया गया।''[3]

इस प्रकार भारतीय संविधान के प्रकाश में हमारी संसद ने जिस मिश्रित अर्थ व्यवस्था को खड़ा किया, उससे आर्थिक परिवर्तन की एक नयी लहर उत्पन्न हुई तथा व्यापार एवं उद्योग कुछ ही हाथों से निकलकर अनेक हाथों के द्वारा और भी कुशलता तथा नये प्रबंधन के साथ फलने-फूलने लगे, जिनसे आर्थिक विकास की सनातन धारा का प्रवाह हो जाना स्वाभाविक ही था। आर्थिक लाभों को सभी के लिए मुहैया कराने के निमित्त 'योजना आयोग' रूपी एक अन्य संस्था का गठन भी हुआ, जिसने तीन बिन्दुओं को सामने रखकर अपना कार्य प्रारम्भ किया - प्रथम, भारत में सभी नागरिकों, पुरुषों और महिलाओं को जीवन-निर्वाह के पर्याप्त साधन समान रूप से प्राप्त करने के अधिकार की सुनिश्चितता; द्वितीय, देश के भौतिक संसाधनों के स्वामित्व और नियंत्रण का बंटवारा इस प्रकार किया जाए, जिससे कि अधिकाधिक नागरिकों को इससे लाभ

प्राप्त हो सके; और तृतीय आर्थिक व्यवस्था की प्रक्रिया से सामान्य नागरिकों के हित की कीमत पर संपत्ति और उत्पादन के साधनों का केन्द्रीकरण नहीं होना चाहिए।

यद्यपि नियोजन द्वारा प्राप्त की जाने वाली आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों का अनुकरण किया गया। फिर भी नियोजकों की चेतावनी थी कि ''आर्थिक समानता लाने के लिए किये गये उपायों को शीघ्रता से लागू करने के अल्पकाल में बचत और उत्पादकता का स्तर प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो सकता है। मसौदे में सामाजिक और संस्थागत परिवर्तनों की आवश्यकता पर जोर दिया गया था, लेकिन निर्धारित योजना में अन्तिम रूप से प्रमुख महत्व तथा बल, उत्पादन वृद्धि की आर्थिक आवश्यकता पर दिया गया था। इसके फलस्वरूप एक ऐसा दृष्टिकोण विकसित हुआ, जिसने नियोजन के अन्तर्गत राज्य की भूमिका को निजी क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक सामाजिक पूंजी उत्पन्न करने और आर्थिक प्रोत्साहन देने तक ही सीमित रखा।'' भले ही व्यवहार में संस्थागत सुधारों को नाममात्र का ही महत्व प्रदान किया गया, लेकिन इन तमाम प्रयासों से एवं नीतियों से आर्थिक क्षेत्र में खूब बदलाव हुआ, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है। समय के साथ- साथ इन नियोजनों व नीतियों में जो मन्थरता और स्थिरता आ गयी थी, उसे बाद में समाप्त करने के प्रयास किये गये। कांग्रेस की संसदीय एकाधिकार स्थिति का जब खण्डन हुआ और सन् 1977 में जब गैरकांग्रेसी, जनता पार्टी की सरकार बनी, तो इसने नयी विकास नीति को खड़ा करके बदलाव की फसलें उगायीं। यह दूसरी बात है कि जनता पार्टी की आर्थिक नीतियां भी प्रतिस्पर्धात्मक एवं राजनीति प्रेरित रहीं, जिनका सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन में विशेष योगदान नहीं कहा जा सकता। लेकिन राजनीतिक बदलाव में जनता पार्टी की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस काल की राजनीतिक भूमिकाओं के कारण ही 1980 के मध्यावधि चुनावों में प्रायः तमाम राजनीतिक दलों ने अपने- अपने चुनावी घोषणा पत्रों में पृथक-पृथक आर्थिक नीतियों की प्रस्तुति करके भारतीय जनता को रिझाने की कोशिश की। जनता अब तक राजनीतिक तौर पर पर्याप्त चेतन हो चुकी थी और उसने अपनी राजनीतिक जागृति का परिचय भी दिया। लेकिन तमाम राजनीतिक दल वायदा-खिलाफी करके सामाजिक लक्ष्यों से पीछे रहते हुए नजर आते हैं-

''सन् 1980 के मध्यावधि चुनावों के समय लगभग सभी राजनीतिक दलों ने अपने घोषणा पत्रों में ऐसी आर्थिक नीति की घोषणाएं की थीं, जो एक-दूसरे से एकदम भिन्न थीं। लकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि लगभग सभी स्थापित राजनीतिक संगठनों का प्रयत्न लोकप्रिय नारेबाजी की सहायता से जनसाधारण की भावनाओं को संतुष्ट करना था। कांग्रेस (इ) ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में सामाजिक परिवर्तन लाने का वादा किया था, परन्तु पार्टी ने सामाजिक परिवर्तन के मसले को गौण लक्ष्य के रूप में लिया, जिस पर क्रमबद्ध तरीके से अमल किया जाना था। इस हेतु जिन उपायों का उल्लेख किया गया था, उसमें सभी क्षेत्रों में अनुमानित प्राप्त क्षमता का पूर्ण उपयोग करना, स्थानीय उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए निर्यात संभावना में वृद्धि एवं उसके लिए महत्वपूर्ण मदों के आयात हेतु विदेशी मुद्रा का उपयोग करना सम्मिलित था। इन सभी उपायों की घोषणा व्यापारी वर्गों के हितों को ध्यान में रखकर की गयी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस में भारतीय अर्थव्यवस्था को पूंजीवादी आधार पर विकसित करने की प्रवृत्ति थी और उसके लिए प्रयास किया जा रहा था। कांग्रेस की यह नीति असफल सिद्ध हुई। जनाक्रोश इसके कारण पनपता सा दिखने लगा था। इसलिए इसके समाधान के लिए अर्थ व्यवस्था में उदारवादी नीति को विकसित किया गया, जिसने आर्थिक क्षेत्र में ऐतिहासिक बदलाव पैदा किया।''[4]

उदारीकरण की नयी आर्थिक नीति का उद्देश्य

प्रतियोगिता को पुनर्स्थापित करना था, जिससे बाजार के यंत्र संसाधनों का आवंटन करने में व्यापक भूमिका अदा कर सके। नीति निर्धारकों को आशा थी कि औद्योगिक क्षेत्र को प्रशासनिक प्रतिबन्धों से मुक्त करने से देश-विदेश में प्रतियोगिता को प्रोत्साहन मिलेगा और इससे आर्थिक परिवर्तन अवश्यंभावी हो जाएगा। लेकिन इसके परिणाम दूसरे रूप में सामने आये तथा अर्थव्यवस्था की वृद्धि इतनी पूंजीवादी और आयात-सघन हो गयी, कि मध्यम स्तर पर घरेलू उद्यम और लघु उद्योग क्षेत्र धीरे-धीरे सिकुड़ने लगे। पेंचकस तकनीकी पर आधारित उद्योगों में अत्यधिक आयात सघन वृद्धि और धनी वर्ग की उपभोग की आवश्यकताओं की संतुष्टि करने वाली अर्थव्यवस्था से भारत पर विदेशी ऋण का भार बहुत अधिक हो गया। इसलिए सन् 1989 में भारत विश्व का तीसरा सर्वाधिक ऋणी राष्ट्र बन गया। कुल मिलाकर उदारीकरण विदेशों में बने माल के आयात तक सीमित रहा।

नई आर्थिक नीति के नाम पर जो परिवर्तन हुए और उनके द्वारा अर्थ व्यवस्था में जो खुलापन लाया गया, वह न तो क्रमबद्ध था और न ही उससे सुधारात्मक स्पश्टता सामने आती है और, न ही वह आर्थिक बदलाव के उद्देश्य को प्राप्त कर सकी, जिसे संसदीय प्रयासों में सोचा गया था। यह दूसरी बात है कि विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तनों की स्थिति व्यापकता लिए हुए थी। यथा, ''पांच क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन किये गये- उद्योग, व्यापार, वित्त, वित्तीय संबन्धी और मुद्रा संबन्धी। बाद में सरकार द्वारा विश्व बैंक को दी गयी विकास नीति में कहा गया कि आर्थिक सुधार के उद्देश्य समानता और सामाजिक न्याय प्राप्त करना है, एक ऐसी राजनीतिक प्रणाली विकसित करना है, जो शासन और स्वतंत्रता दोनों प्रदान करने में सक्षम हो। संसद के माध्यम से सरकार का मुख्य उद्देश्य गरीबी का उन्मूलन करने और जीवन स्तर को सुधारने के लिए विकास की उच्च गति प्राप्त करना बताया गया। इन उद्योगों को प्राप्त करने के लिए सरकार की सुधारवादी रणनीति का उद्देश्य- उदारवादी व्यापार, विनिमय दर प्रणाली, जो व्यापार के लिए आवंटन संबन्धी प्रणाली से मुक्त हो, प्रतिस्पर्धात्मक बाजार परिस्थितियों में कार्य करने वाली वित्तीय प्रणाली, सक्षम और प्रभावशाली औद्योगिक क्षेत्र, स्वायत्त, प्रतिस्पर्धात्मक और व्यवस्थित सार्वजनिक उद्यम क्षेत्र, जिसका उद्देश्य मूलभूत ढांचा और वस्तु सेवा की व्यवस्था करना हो।''[5]

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि संसद के माध्यम से जो आर्थिक नीतियां लागू हुईं, और उनसे जो परिवर्तन हुआ, वह प्रशंसनीय ही कहा जाएगा। भारत ने अनेक क्षेत्रों में परिवर्तन को प्राप्त किया। हमारे औद्योगिक उत्पादन में कई गुना वृद्धि संभव हो सकी। सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में धातु और भारी इंजीनियरिंग सहित खनन और प्रोसेसिंग उद्योगों को सम्मिलित किया गया। पिछड़ी और आश्रित अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण किया गया तथा उसमें और भी ज्यादा आत्मनिर्भरता बन सकी। बैंकिंग, बीमा, वाणिज्य, और परिवहन के क्षेत्र में भी पर्याप्त विकास के कारण परिवर्तन हुआ। प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के नामांकन को देखकर भी प्रतीत होता है कि शैक्षिक क्षेत्र में भी परिवर्तन की लहर आयी है। प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के नामांकनों में वृद्धि हुई और शैक्षिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। तकनीकी रूप से भारत तृतीय विश्व के देशों में सबसे उन्नत देश के रूप में उभरकर आया। भारत के द्वारा अंतरिक्ष में उपग्रह भेजे गये, आणुविक विस्फोट भी भारत में हुए और समुद्र के भीतर भी खदान के कार्यक्रम आरम्भ हो गये। भारतीय रक्षा सेनाओं ने भी महत्वपूर्ण प्रगति अंकित करायी। जाति और अन्य परंपरागत मान्यताओं में भी परिवर्तन हुए। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आधार पर भी वृद्धि संभव हो सकी।

ऐसी तमाम उपलब्धियों के उपरांत भी भारत में गरीबी, बेरोजगारी, समान न्याय और आत्मनिर्भरता

सरीखी मूलभूत समस्याएं अभी भी मौजूद हैं। एक के बाद एक लागू की गयीं पंचवर्षीय योजनाएं देश की अर्थव्यवस्था के मूल ढांचे में परिवर्तन लाने में असफल रही हैं। इसके बाद भी इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि बदलाव आया है। सामाजिक विद्रूपताएं सरलता-सहजता की तरफ बढ़ी हैं, जिससे समाज में नये संबन्धों का उदय संभव हुआ है। राजनीतिक जागरण में भी चार चांद लगे हैं। भारतीय लोकतंत्र में भारत के ग्रामीण अचंलों में गरीबी एवं दरिद्रता से पीड़ित, परन्तु मताधिकार से लैस मानव जाति का एक विशाल समुद्र रह रहा है। आर्थिक प्रयासों से आर्थिक स्थिति में बदलाव हुआ है और चुनावों में मत देने के अधिकार के प्रति जागृति हुई है।

ऐसा भी नहीं है कि गरीबी के बाद निष्क्रियता नहीं टूटी है। बल्कि इसके दबाव को समझते हुए संसद भी उनके प्रति जागरूक हुई है और इन्हें राजनीतिक अधिकार भी प्रदान हुए हैं। भारतीय संसद में महिलाओं का एक-तिहाई आरक्षण इसी बात का प्रमाण है। परिवर्तन इस रूप में भी देखा जा सकता है कि जनता के बीच से वोटों की ठेकेदारी की प्रथा कम हुई है। वर्तमान में निर्वाचन आयोग की सक्रियता से चुनाव में लोकतांत्रिक व्यवस्था में अधिक पारदर्शिता सामने आयी है। बुद्धिजीवी वर्ग, जो राजनीति के प्रति उदासीन हो चला था, सजग हो गया है, और उसके साथ- साथ अन्य नागरिक भी मतदान करने के प्रति आगे आये हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि संविधान के प्रकाश में संसद के माध्यम से चहुंमुखी परिवर्तन संभव हुआ है और यह परिवर्तन सकारात्मकता का प्रतीक है। भ्रष्टाचार की जो धारा बह रही है, वह इस परिवर्तन के कारण ही एक दिन समाप्त हो सकेगी।

-: सन्दर्भ सूची :-

1. नन्दूराम :- एस्सेज ऑन दलित इन इण्डिया, सोशल एक्शन, अंक-43, पृ0-412-25
2. प्रदीप त्रिपाठी :- मानवाधिकार और भारतीय संविधान, संरक्षण एवं विश्लेशण, राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2002 पृ0-175-176
3. डॉ0 ए0एस0 नारंग :- भारतीय शासन और राजनीति, गीतांजलि पब्लिशिंग हाउस, संस्करण-2002, पृ0-328
4. R. Brass Paul :- The Politics of India since Indipendence, Cambridge University Prees, 1990, p-487
5. एस0के0 सिंह :- इकॉनोमिक रिफार्म्स इन इण्डिया एम्प्लायमेंट न्यूज, 22(32) :1-2, 1955

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

AGING EFFECTS ON POLITICAL BEHAVIOUR IN INDIA

Dr. Shivali Agarwal
Asso. Professor
Department of Political Science
I.N.PG College, Meerut

"Old age" and "the elderly" are terms which are common currency in the most popular uses and more academic environments. Despite the frequencies with which the terms are used the definition of exactly what is "old Age" is problematic. Academicians have defined old age from various angles. One of them is from biological view point. Biologists refer to aging as 'Senescence'. This is a general term which is used to describe decrease in the efficient functioning of an organism with age. It is important to remember that senescence is a natural process which must be distinguished from abnormal processes which bring about pathology and disease. Biologists consider that aging is the change which occurs in the post reproductive phase of life, resulting in a decrease in the survival capacity of the organism which brings about a decrease in its adaptive capacities.

Another view point of defining old age is through chronology and the third approach of defining old age is through economic dependency, this approach considers that the experience of aging an late life can best be understood by looking at relationships and social structures that this produces. From the Political point of view it is very surprising that aged persons have a prosperous graph in the political career when they grew older so in this paper we are trying to seek the relations between aging and the political behavior. Not only the Voters but also the leaders are effected by their aging in taking Political decision.

As we know Our Constitution includes formal minimum age for holding high office in central Government or state government for e.g. 35 is the minimum age for Presidency and 25 for the Member for Lok sabha. These are the rules of minimum age which must be followed by the Candidates. Presumably these rules were instituted in the belief that sufficient maturity and experience are necessary to fulfill the duties of these offices. One interesting point is that none of these laws, state or Central, imposes a maximum age for officeholders. This point should be cleared in our mind that whether the process of aging, period events or the flow of cohorts influences Political behaviors such as voting, Participating in Campaigns, and running for office. An extension of this thought has to do with the issue of political power among the aged. As Societies age, is there a potential or likelihood that the older population will take

over the political process and control the direction taken by the Government. The issue is an important one, because Political control determines who fashions the policies of any government. If younger people are politically active in large numbers, politicians in democratic societies will be responsive to their interests and agendas. If on the other hand, older persons dominate at the voting booth, the voices speaking to elected officials could highlight different issues and the political agenda could take a different path. Do age, period, or cohort really make a difference in how people participate in politics and vote? these are some questions raised by me and trying to find out all the possible answers in this paper.

Period effects seem likely to be especially potent in the Political likely to be especially potent in the political domain. Social and Political events shape the political attitudes of people of all ages including their views of Government and of specific policies. It is therefore not surprising that major period events, such as the terrorist attack in 2004 on the Parliament, have had negative effects on confidence in government across all age groups. But such events may also influence people's orientations toward politics and their attitudes and confidence in the political institutions that govern them, selectively on the basis of age. we can take an example also when Indira Gandhi died all old age women gave their vote to Rajiv Gandhi in sympathy. Let us revisit the theoretical debate on the relative impacts of aging and cohort. Does aging influence political behaviors and orientations or is cohort experience more influential ? Recall Manheim's hypothesis that, following a formative period in late adolescence and early adulthood, core attitudes and orientations(including political ideas) are set, changing relatively little with advancing age. If this hypothesis is true, Young people's political attitudes are shaped by Political socialization within their families and by the political attitudes of the times in which they mature. Thus, If Manheim is correct, Political behaviors and orientations in society would change slowly, as succeeding cohorts with differing attitudes move through the age structure of society. If however, events can modify political attitudes and behaviors at any age, then Mannheim's view would not be supported and political change could occur at a more rapid pace. If we find evidence that attitudes and political behaviors change dramatically with advancing age(Alwin and Krosnick,1991,Manheim,1952) then Manheim was wrong about the importance of cohorts, and that there may be an aging effect.

In India if we have a look on the construction of XII Lok sabha than we can observe that the young MPs are only 1.72% (25-30) and the aged persons(Mps) got maximum percentage 17.78%. The table 1. and Graph 1.shows that the percentage increases as the age increases.

Table-1 and graph shows that not only old age males but females are much achiever larger no. of seats than the younger. Political activism can take many forms, from voting or participating in campaign to contributing to political causes, running for office, or simply following political issues in great detail in the media. Research data says that young adults are less likely to be political active by writing to their representatives or belonging to political organizations than are members of older age groups. If we observe the office bearers of any National or regional Political parties, they are aged persons almost near about 60-75. A young person could not get any prominent chair in the political institutions. The Table shows that 1/3 members are not less than 45 So the Largest figure represents aged persons. The data of Election Commission proclaims that the Voter

Graph 1.

THE AVERAGE AGE : 53 Years

Male Members of XII Lok Sabha

Female Members of XII Lok Sabha

fage.gif

Table 1
AGE-GROUP WISE STATISTICS

AGE GROUP	MALE	FEMALE	TOTAL	PERCENTAGE
25 - 30 Yrs.	7	2	9	1.72 %
31 - 35 Yrs.	13	2	15	2.87 %
36 - 40 Yrs	35	6	41	7.84 %
41 - 45 Yrs.	65	8	73	13.96 %
46 - 50 Yrs.	82	11	93	17.78 %
51 - 55 Yrs.	86	2	88	16.83 %
56 - 60 Yrs.	61	4	65	12.43 %
61 - 65 Yrs.	62	2	64	12.24 %
66 - 70 Yrs.	37	4	41	7.84 %
71 - 75 Yrs.	22	1	23	4.40 %
76 - 80 Yrs.	8	1	9	1.72 %
81 - 85 Yrs.	2	0	2	0.38 %
AGE NOT GIVEN	19	1	20	3.68 %
TOTAL	499	44	543	100.00 %

Sources : Data of Loksabha, Government of India website from Internet

registration by age get highest ranks of those person who are above than 65. So we will have to say that aging effects the political behavior because one of the most consistent findings in the study from election commission reports, of Political behaviors among the older population is their high rates of participation through voting.

REFERENCES:

Alwin,D.F and J.A.Krosnick.1991.Aging, cohorts, and the stability of sociopolitical orientations over the life span. American Journal of Sociology ,97,(1),169-195.

Manheim.K.1952.Ideology and Utopia, New York Harecourt, Brace &World.

Fisher, D.H "Growing old in America", New York: Oxford University Press),1978.

Riley, M.W., Johson M.and Fonner , A, "Aging and Society" in A Sociology of Age-Stratification (New York: Russell Sage Foundation).Vol.3,1972.

Ramamurthi, P.V "Life Satisfaction in the older years", Indian Journal of Gerontology, Jaipur,Vol.2,No.s 3-4, 1970.

See Government of India website on Internet

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

MAPPING CLIMATE CHANGE NEGOTIATIONSFROM STOCKHOLM CONFERENCE 1972 TO PARIS AGREEMENT ON CLIMATE CHANGE 2015

Dr. Sanjay Sharma
Assistant Professor& Head
Deptt.of Political Science
Army Cadet College, IMA, Dehradun

Abstract

Climate change has set serious challenges before us. Every country, big or small, is feeling the heat of climate change. Rise in the sea level has already started and most of the Island Countries like Tuvalu are under the threat of submergence under the sea. Climate change negotiations have initiated in Stockholm Conference on Human Environment 1972 and recently culminated into Paris Agreement on Cliamte Change 2015. This paper makes a modest attempt to map these climate change negotiation from the vantage point of India. India being the second largest country of the world is under severe pressures from developed countries to take up higher emission reductions in Intended Nationally Determined Contributions (INDCs). India has to present her Intended Nationally Determined Contributions till Nov 2015 for Paris Conference Dec 2015 COP-21. NarenderaModi, in his address to United Nations General Assembly in 2015, has emphasised that "the focus on environment needs a recalibration from climate change to climate justice." Climate justice is a question of equity and its central principle is Differential but Common Responsibilities (CBDR) which has been agreed upon in Kyoto protocol. It says that though every state has common responsibility for controlling climate change but developed countries owe more because oftheir larger contributions to global warming. However, in successive negotiations developed countries argued that developing countries like India, China, Brazil and South Africa are also contributors of Green House Gas (GHG) emissionsand therefore,they shouldshare equal reductions in carbon emissions. However, based on climate justice India always emphasised that principle of equity says that responsibilities should follow one's contribution to the problem. India's per capita emission of Co2 is 1.7 (tonnes) while it is 17 for USA, 13 for Russia, 8 of China and 7 for European Union. Therefore,Indiaargues that differential responsibilities have to be operationalised. According to Modi Paris Agreement on climate change is the victory of climate justice as every country is required to prepare its own Intended Nationally Determined Contributions (INDCs). Besides, India has also signed the Kigali agreement in October 2016 its objective is to

reduce the emission HFCs. Kigali agreement has three groups on of developed country and two among developing countries.India successfully argued climate justice andopted for the second group of developing countries with moderate targets.

(Key Words: Climate Change, Paris Conference COP-21, Intended Nationally Determined Contributions, China-US Climate Agreement, India, Common but Differential Responsibilities, United Nations Conference on Convention on Climate Change, Kyoto Protocol)

Introduction

Climate change is one of the most alarming and debated issue of 21st century. It is a result of cumulative result of manmade interventions into nature. Its importance can be gauged from the recent statement of Barack Obama that "Climate change can no longer be denied, or ignored." He further added that "Today, there's no greater threat to our planet than climate change." I have deliberately referred to his statements because till November 2014 the United States has never signed any environmental treaty. Kyoto protocol was boycotted by the United States. It was from United Nations Framework Convention on Climate Change (UNFCCC) last year meet at Lima Cop-20 that its leaders from Obama to John Kerry have become ardent supporter of treaty on climate change and creating pressures on developing countries to follow the suit. It is important to note that problem of climate change is not natural rather it is manmade. It is the model of our development which has aggrieved the deterioration of environment. However, humans have divided the earth in artificial borders but environment remains undivided. Environment cannot be confined in the manmade boundaries. Therefore, nations have come together to resolve the common problem of climate change. It was in the Earth Rio conference of United Nations that participant states agreed to constitute United Nations Framework for Convention on Climate Change (UNFCCC) in 1992. The main purpose of UNFCCC is to explore cooperation among nations to control climate change. UNFCCC regularly calls the meetings of its members to discuss the strategy and agreement on climate change. These meetings are known as COPs. It was in COP-20 at Lima in Dec 2014 that all member states agreed to work on Intended Nationally Determined Contributions (INDCs). Being the second largest populated countries India is constantly targeted by the developed countries to set up higher reduction targets. On the other hand the United States and China had entered into a climate agreement on Nov 2014. Thereafter, the United States and China are pressurizing India to have greater commitment towards limiting its CHG emissions. It is in this background that this paper analyses India's commitment for development and climate change. Paper finds that there are many reasons for India to protect its agenda on development without sacrificing its responsibilities towards climate change. This paper is divided into three parts. First part explains the intensity and seriousness of climate change by referring to different National and International reports and documentaries. Second part deconstructs climate change negotiations from Stockholm conference 1972 to Paris agreement on climate change 2015. Last but not the least conclusion discusses India's efforts for balancing development with her efforts for climate change.

Climate Change: A Brief Analysis

Climate change is widely and deeply studied phenomenon. Its importance can be viewed from the fact that it is covered from primary school education to specialized global

institutions like the United Nations. Climate change is not limited to one specific field of study rather it is studied in environmental studies, economics, and geography and policy science. The problem of climate change is well recognized form the fact that different specialized UN agencies, non-state actors and various states have issued their reports on climate change. Ministry of Environment and Forest of Government of India has published a report Climate Change and India in 2010. It is popularly known as 4X4 INCCA report. It concentrates on impact of Climate Change on four key sectors agriculture, forests, human health and water and four regions the Himalayan, the Western Ghats, North Eastern region and the Coastal region of India. It has following important findings:

1. If man-made GHG emissions were completely halted today, sea-level will continue to rise to the end of this century.
2. The annual mean surface air temperature is projected to rise by 1.7°C and 2.0°C in 2030s. Seasons may be warmer by around 2°C towards the 2030s.
3. All the regions are projected to experience an increase in precipitation in 2030s with respect to 1970s and the increase is maximum in the Himalayan region and minimum increase in the North Eastern region.
4. Irrigated rice in all the regions are likely to gain in yields marginally due to warming as compared to the rainfed crop as the irrigated rice tends to benefit from CO2 fertilization effect. Maize and sorghum are projected to have reduced yields in all the regions.
5. Water yield is projected to increase in the Himalayan region in 2030s by 5-20%, however, water yields are likely to be variable across the North Eastern region, Western Ghats, and Coastal region. In some places in these regions, it is projected to increase and in some places it is projected to decrease (MOEF 2010).

Planning commission of India has also formed a sub group to study climate change in 12th five year plan. In this report the sub group has studied the vulnerability of various areas like agriculture, water resources, forest and eco system, coastal areas, health system and economic impacts. It has also deliberated upon National action plan on climate change, State action plan on climate change and financing of climate change (GOI 2011).

Intergovernmental Panel on climate Change has come out with its fifth assessment report in four volumes i.e. Climate Change 2013 the Physical Science Bias; Climate Change 2014, Impact, Adaptation and Vulnerability; Climate Change 2014 Mitigation of Climate Change and Climate Change 2014: The Synthesis Report. The conclusions of the IPCC working groups open with a statement of Albert Einstein "Problems cannot be solved at the same level of awareness that created them." Its major findings are

1. The atmosphere and the oceans have warmed;
2. The amounts of snow and ice have diminished;
3. Sea level has risen;
4. The concentrations of GHGs have increased;
5. CO2 concentrations have increased by 40% since preindustrial times from fossil fuel emissions;
6. The ocean has absorbed about 30% of the emitted anthropogenic carbon dioxide, causing ocean acidification;

7. Human influence on the climate system is clear;
8. There is high confidence that changes in total solar irradiance have not contributed to the increase in global mean surface temperature over the period 1986 to 2008 and
9. Continued emissions of GHGs will cause further warming and changes in the climate system (Pachauri 2013).

This paper ends with a very influencing statement of Mahatma Gandhi read as "A technological society has two choices. First it can wait until catastrophic failures expose systemic deficiencies, distortion and self-deceptions…Secondly, a culture can provide social checks and balances to correct for systemic distortion prior to catastrophic failures."

There are many other reports that put forward the fact that climate change is happening and it is not a myth created by few. Like in 2006 Vice president of the USA has come out with a documentary. An Inconvenient Truth it speaks about the dangers of climate change and its impacts on habitat and ecology of earth. Recently in November 24, 2014 World Bank has come out with a Report "Turn down the Heat: Confronting the new Climate normal". It talks about ill effects of climate heating of 4°C and how these ill effects can be controlled by keeping the rise of temperature within the level of 2°C. According to Rachel Kyte, World Bank Group Vice President and special envoy for Climate Change "urgent and substantial technological, economic, institutional and behavioral change is needed to reverse present trends. Economic development and climate protection can be complementary. We need the political will to make this happen (World Bank 2014)." There are many indigenous documentaries revealing the impacts of Climate Change on India. Vijay S. Jodha has directed a documentary "The Weeping Apple Tree" in 2005. It reveals that apple growing belts in India are moving towards higher altitude because of climate change. Therefore there is a unanimous finding that climate change is taking place and there are numerous reports, documentaries and findings to support it.

There are limited options to resolve this challenge created and faced by our fossil fuel driven model of development. There is one technological option i.e. exploring renewable technology in such a manner that it can replace our massive dependence over fossil fuel. However, such a transformative technological revolution is not visible in near future. It is certain that our future relates with political will where multilateral political and a political actors can facilitate a platform to different stakeholders so that states can control their emission and control the rise of temperature to address the problem of climate change.

Climate Change Negotiations: Stockholm 1972 to Paris Agreement 2015

The United Nations under series of international conferences beginning with UN Conference on Human Environment 1972 has facilitated states to come out with a treaty in 1992 known as United Nations Framework on Convention on Climate Change (UNFCCC). This convention facilitates members to come together and deliberate upon how to control the climate change. Kyoto Protocol was an important outcome of this convention. In 1997 the conference of Parties took place Kyoto Island of Japan where climate change Protocol was signed. It is famously known as Kyoto Protocol. However, in this protocol stand of developing countries have been well adored that industrialized countries owes more to the cause of climate change as these countries are more responsible for the global warming vice versa developing countries are less responsible for

climate change. This principle is known as common but differential responsibilities (CBDR). This principle was recognized in UNFCCC in 1992. However, it was brought into practice under Kyoto Protocol in 1997. It has facilitated countries like India to use green technology and generate emission reduction credits and reap benefit from carbon trading. In successive COPs India along with other developing countries has pressed its stands for CBDR. However, in recent COPs like COP 14 in 2007 at Bali,COP 15 in 2009 at Copenhagen (Accord), COP 16 in 2010 at Cancun (Agreement), COP 17 in 2011 at Durban, COP 18 in Doha in 2012 (Climate Gateway), COP 19 in Warsaw (Poland) in November 2013 and COP 20 in Lima (Peru) Dec 2014. There is a strong attempt by developed countries to dilute the clause of CBDR. Developed countries argue that equal responsibility is required to tackle the climate change. Therefore CBDR should be modified in the changed circumstances. However, in COP 20 India along with other developing countries has felt a greater pressure to adopt legal bindings and to do away with CBDR. The major reason for it was that China and the USA are two countries that remained out of any legal binding for climate change. In November 2014 both China and the USA had an agreement on Climate Change. This agreement declares that The United States intends to achieve an economy-wide target of reducing its emissions by 26%-28% below its 2005 level in 2025 and to make best efforts to reduce its emissions by 28%. On the other hand China intends to achieve the peaking of CO2 emissions around 2030 and to make best efforts to peak early and intends to increase the share of non-fossil fuels in primary energy consumption to around 20% by 2030. Therefore, in Lima both USA and China made a strong plea for targeted reductions in emissions from developing countries. Mr. John Kerry during COP 20 at Lima said "Every nation I repeat, every nations has a responsibility to do its part." It was at the G 20 meet at Brisbane, Australia that President Obama has announced a US contribution of $ 3 billion to Green Climate Fund and made a statement that "No nation is immune and every nation has a responsibility to do its part." This climate agreement has been announced just after an offer made by the European Union (EU) - the third largest emitter - to reduce its emissions to 40 per cent below 1990 levels by 2030, conditional on whether other countries (advance developing countries like India) would make similar commitments. Therefore, finally it was accepted in Lima that every state both developed as well as developing will bring their own target of contributions and it will be known as Intended Nationally Determined Contributions (INDCs). These contributions will work on the principle of "pledge and review approach." It means that every state will have to accept international review of implementations. However, recently the Unites States under the leadership of Trump has withdrawn from the Paris climate change agreement. Trump is calculating Paris agreement in economic terms. According to him Paris agreement on climate change is allowing "China to build hundreds of additional coal plants. So we can't build the plants, but they can, according to this agreement. India will be allowed to double its coal production by 2020. We're supposed to get rid of ours."

Conclusion

India is a responsible member state in UNFCCC for climate change. India is seriously engaged in addressing climate change on her part. India is taking many initiatives for renewable energy. Ministry of New and Renewable Energy has organized re-invest-

2015 and announced re-invest 2016 which facilitates investors to invest more in renewable energy sources. Besides, India has overcome the deadlock over civil nuclear deal with USA. It will facilitate India to generate clean energy. India is a responsible state and making sincere efforts to reduce Green House Gases and generate green energy according to her capacity and available resources. However, it is necessary to understand that India requires exploring its potential of development. India has prioritized removal of poverty and development in her environmental negotiations. Therefore, India is balancing her development and responsibilities for climate change. However, India is resisting pressures of developed countries to go for higher reductions. On global parameters of CO2 emissions India's emission of GHGs is comparatively very low in comparison to China, USA and European Union. India has recently ratified Paris Agreement and signed Kigali Agreement to reduce HFCs gases and reconfirmed her commitment towards climate justice. Still climate justice cannot be ignored and recent withdrawal of the United States from Paris Agreement on Climate Change is a serious setback to all the committed nations working together against climate change. Nations of the world must rise, awake, and work together before it become too late to save our mother earth and sustain life over it.

End Notes

- Online available at http://www.moef.nic.in/downloads/public-information/fin-rpt-incca.pdf
- Climate Change & 12th Five Year Plan, Report of Sub Group on Climate Change, Govt of India, New Delhi, Oct 2011.
- Pachauri, R.K Conclusions of the IPCC Working Group I Fifth Assessment Report, AR4, SREX and SRREN. Warsaw, Poland. 11 Nov 2013.
- Online available at https://www.youtube.com/watch?v=OcLG-tcMvyg
- Online available at http://www.worldbank.org/en/news/press-release/2014/11/23/new-climate-normal-poses-severe-risks
- Online available at www.downtoearth.org.in/node/8289
- Online available at http://www.whitehouse.gov/the-press-office/2014/11/11/us-china-joint-announcement-climate-change
- Online available at http://unfccc.int/meetings/copenhagen_dec_2009/items/5264.php
- Online available at http://www.thehindu.com/news/international/us-will-withdraw-from-paris-climate-deal-says-president-donald-trump/article18702249.ece?homepage=true

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

जनपद बुलन्दशहर की प्रमुख जातियों का आर्थिक सर्वेक्षण

डॉ० राजेश गर्ग
एसोसिएट प्रोफेसर- इतिहास विभाग
डी. ए. वी. (पी.जी.) कालिज, बुलन्दशहर

किसी भी समाज की प्रगति उसकी आर्थिक सुदृढ़ता पर निर्भर करती है। व्यक्ति के लौकिक सुख उसके आर्थिक विकास से प्रभावित होते हैं। आर्थिक स्थिति व्यक्ति के मानवीय सम्बन्धों के साथ–साथ सामाजिक सम्बन्धों को भी परिभाषित करती है।[1] भारतीय समाज में आर्थिक विकास का सम्बन्ध पुरूषार्थ से है, जिसमें 'अर्थ' को एक आवश्यक तत्व माना गया है। अर्थ के द्वारा ही मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।[2] अर्थ की महत्ता को महाभारत में भी स्वीकार किया गया है।[3]

ऐतिहासिक रूप से भारतीय समाज की आर्थिक व्यवस्था वर्ण–व्यवस्था का ही परिणाम थी। इन वर्णों की उत्पत्ति एक विराट पुरूष के अंगों से बताई गयी है। मुख से ब्राह्मण, बाहों से क्षत्रिय, ऊरू अथवा जांघ से वैश्य तथा पैर से शूद्र उत्पन्न हुए हैं।[4]

जनपद बुलन्दशहर में भी ऐतिहासिक रूप से उपर्युक्त व्यवस्था ही किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है, क्योंकि न केवल प्राचीन काल में, अपितु वर्तमान काल में यह क्षेत्र गंगा–यमुना दोआब के कारण आर्थिक रूप से धनी रहा है। वर्णों का यह विभाजन व्यवसाय पर आधारित है। अलग–अलग वर्णों के अलग–अलग व्यवसाय थे। पूर्व वैदिक काल में ब्राह्मण वर्ण का व्यवसाय वेदाध्यन, धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न कराना, तप करना आदि थे। क्षत्रिय वर्ण का मुख्य कार्य शासन–संचालन था। वैश्य वर्ण का मुख्य कार्य कृषि, पशुपालन तथा व्यापार था, तथा शूद्रों का कार्य तीनों वर्णों का सहयोग करना था।[5]

स्मृतिकाल मे यह वर्ण व्यवस्था जटिल जातीय व्यवस्था में बदल गयी तथा जाति निर्धारण कर्म से न होकर जन्म से होने लगा। जो व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता वह उसी जाति का सदस्य माना जाता था।[6] इसी समय कुछ पेशेवर जातियों का भी जन्म हुआ, जैसे– सूत, रथकार, चर्मकार, निषाद, भिषक, बढ़ई, जुलाहे, लुहार आदि।[7] अनेक जातियों का निर्धारण अनुलोम–प्रतिलोम विवाहों के फलस्वरूप हुआ।[8]

जनपद बुलन्दशहर में ऐतिहासिक रूप से जजमानी व्यवस्था का रूवरूप प्रकट होता है। जजमानी व्यवस्था विभिन्न जातियों के बीच सहयोग करने वाली कड़ी थी। इस व्यवस्था में अनेक सामाजिक अवसरों पर एक जाति दूसरी जाति को सहयोग देती थी अथवा लेती थी।[9] जैसे– कुम्हार विभिन्न अवसरों के लिए मिट्टी के बर्तन बनाता था व उन्हें बचेकर अपनी आजीविका चलाता था तथा इससे समाज की आवश्यकतओं की पूर्ति

होती थी। इसी प्रकार ब्राह्मण यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठान कराता था तथा बदले में उसे दान में अन्न, धन आदि मिलता था,[10] जिससे ब्राह्मण की आजीविका चलती थी। इसी प्रकार अन्य जातियां भी जजमानी व्यवस्था में अपना–अपना सहयोग देती थीं। जजमानी व्यवस्था पारम्परिक आर्थिक व्यवस्था की ही देन है।[11]

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी समाज की प्रगति के लिए आर्थिक विकास अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि कौटिल्य ने अर्थ को संसार का मूल माना है।[12] महाभारत में भी अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित वार्ता अर्थात् कृषि, पशुपालन व व्यापार को लोक का मूल माना गया है।[13]

इस प्रकार प्राचीन वर्ण व्यवस्था व्यवसाय के आधार पर जातियों में विभाजित हुई। अनेक जातियों ने अलग–अलग व्यवसाय अपनाकर अपने–अपने परिवार का भरण–पोषण किया। जातियों का यही स्वरूप जनपद बुलन्दशहर में भी रहा है। जातियां अनेक व्यवसाय अपनाकर न केवल अपने परिवार के पालन में, अपितु देश की अर्थव्यवस्था में तथा आर्थिक विकास मे योगदान दे रही हैं, जैसे– कृषि के व्यवसायीकरण और नगरों में व्यवसायों के बढ़ते अवसरों ने न केवल ग्रामीण जीवन स्तर और आय को उच्च किया है, अपितु इसके द्वारा भूमि का सम्बन्ध और परम्परागत मूल्यों में भी परिवर्तन उत्पन्न हो रहा है।[14]

भारत की आर्थिक स्थिति कृषि पर आधारित रही है। जनपद बुलन्दशहर में भी कृषि आय का प्रमुख साधन रही है। वैदिक काल में कृषि से सम्बन्धित अनेक शब्दों का विवरण मिलता है। हल से जोती गयी भूमि को उर्वरा या क्षेत्र कहते थे।[15] वैदिक काल में हल को 6, 8 या 12 बैल मिलकर खींचते थे।[16] वैदिक काल में सिंचाई में काम आने वाले कुएं अवट्ट कहलाते थे।[17] शतपथ ब्राह्मण के अनुसार कृषि में बैल, गाय आदि पशुओं का उपयोग होता था।[18] उत्तर वैदिक काल में हल मूठ लकड़ी के बने होते थे, जिनका उपयोग कृषि कार्य में किया जाता था तथा आसानी से उपयोग किया जा सकता था।[19]

प्राचीन काल में कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों व उद्योगों का भी विकास हुआ, जैसे– कपड़ा उद्योग, प्रस्तर, कला उद्योग। तकनीक आदि का भी विकास हुआ। इस प्रकार के उद्योगों का विवरण अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों में भी मिलता है। पाणिनी ने वस्त्र बुनने वालों के लिए तन्तुवाय शब्द का प्रयोग किया है।[20]

वैदिक काल में व्यवसायों से सम्बन्धित अनेक वर्गो का उदय हुआ, जैसे– रथकार, हिरण्यकार, लुहार, चर्मकार इत्यादि।[21] मौर्य काल के अभिलेख प्रसिद्ध हैं, जो प्रस्तरों पर उत्कीर्ण किये जाते थे। मौर्य काल प्रस्तर कला के लिए अद्वितीय था।[22] मध्यकाल में भी इन व्यवसायों का विकास हुआ।

आधुनिक काल में ग्रामीण एवं नगरीय अर्थव्यवस्था में अनेक परिवर्तन आये हैं। ग्रामीण समुदाय की आर्थिक संरचना न केवल आर्थिक शक्तियों से प्रभावित रही है, अपितु ऐतिहासिक जातिगत संस्तरण, धार्मिक विश्वास और सामाजिक कुरीतियों का भी इसको प्रभावित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[23]

इस आर्थिक व्यवस्था ने ग्रामीण जीवन में निर्धनता, ऋणग्रस्तता, अपव्यय, अनुत्पादकता इत्यादि अनेक आर्थिक सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है।[24]

कृषि के व्यवसायिकरण और नगरों में व्यवसायों के बढ़ते अवसरों ने न केवल ग्रामीण जीवन–स्तर को, वरन् शहरी जीवन को भी प्रभावित किया है। वैदिक काल में मुद्रा आधारित अर्थव्यवस्था ने ग्रामीण संरचना मे व्यापक परिवर्तन किये हैं।[25] आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों एवं प्रौद्योगिकी का अत्यन्त महत्व है। आर्थिक विकास के लिए अनेक कारक महत्वपूर्ण होते हैं, जैसे– शक्ति के स्रोत, प्राकृतिक संसाधन, प्रौद्योगिकी, जनशक्ति, आर्थिक संगठन, सामाजिक पर्यावरण इत्यादि।[26]

तकनीकी प्रौद्योगिकी, आर्थिक श्रम विभाजन और उसके परिणाम स्वरूप श्रमिक समूहों को निर्धारित करती है।[27]

कृषि यन्त्रिकरण से कृषि में काफी क्रान्तिकारी बदलाव आये हैं। इससे कृषि एवं आर्थिक विकास की दर बढ़ी है। जहां कृर्षि आधुनिक ट्रैक्टर तथा उवर्रक संचालित होती है, वहां कृषि भूमि की इकाई न केवल बड़ी होती है, अपितु अत्यधिक तकनीकियुक्त भी होती है।[28]

आर्थिक विकास मे अनेक अवरोधक तत्व भी हैं, जैसे– धन का अभाव, निम्न औद्योगिक जनसंख्या और प्राकृतिक संसाधनों की कमी आदि।[29] कृषि के यन्त्रिकरण ने ग्रामीण आर्थिक संरचना की गतिशीलता को प्रभावित किया है।[30] कृषि क्षेत्र में अनेक औजारों के उपयोग के आधार पर ग्रामीण तकनीकी संस्कृतियों को तीन रूपों में बांटा गया हैः– 1. खुरपी कुदाली संस्कृति, 2. हलीय संस्कृति, 3. ट्रैक्टर व उवर्रक संस्कृति,[31]

इस प्रकार उपर्युक्त सस्ंकृतियों का सम्मिलित रूप जनपद बुलन्दशहर के ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

भूमि सम्बन्धों का स्वरूप कृषि मे लगे हुए विभिन्न सामाजिक–आर्थिक समूहों का सम्पूर्ण कृषि धन में भाग्य निर्धारित करता है। जैसे– जमींदारी क्षेत्रों में कृषि करने वाले जोतों की अपेक्षा जमींदार कृषि आय का एक बहुत बड़ा भाग ले लेता है।[32] जनसंख्या का आर्थिक विकास से सम्बन्ध को अनेक विद्वानों ने परिभाषित किया है। माल्थस ऐसे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्थिक परिस्थतियों के सन्दर्भ में जनसंख्या के एक सुसंगत और व्यापक सिद्धान्त की रचना की।[33] पूंजी के सम्बन्ध में कार्लमार्क्स का कथन है कि पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली के स्थान पर समाजवादी उत्पादन विधि के आने से जनसंख्या दबाव में गिरावट आयेगी।[34]

ऐतिहासिक रूप से अर्थव्यवस्था में महिलाओं का भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष योगदान रहा है। लेकिन महिलाओं के सम्पत्ति में अधिकार को अनेक स्मृतिकारों ने अधिक महत्व नहीं दिया है। सम्पत्ति में उत्तराधिकारियों की एक लम्बी सूची दी गयी है, किन्तु इसमें पत्नी को उत्तराधिकारी के रूप में सम्मिलित नहीं किया गया है।[35] मिताक्षरा के अनुसार पत्नी को अपनी सम्पत्ति के क्रय–विक्रय अथवा उसे बन्धक रखने के स्वतन्त्र अधिकार नहीं थे।[36]

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि आर्थिक स्थिति का महत्व किसी भी राष्ट्र के लिए एक अत्यन्त आवश्यक पहलू हैं। जनपद बुलन्दशहर ऐतिहासिक रूप से राष्ट्रीय विकास में भागीदार रहा है, लेकिन अभी भी जनपद बुलन्दशहर राष्ट्र के विकास की मुख्य धारा एवं विकास व सुविधाओं में पिछड़ा हुआ नजर आता है। यदि इस क्षेत्र को आर्थिक रूप से सुविधायें मिलेंगी, तो इसे राष्ट्रीय विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकेगा, और यह क्षेत्र सुदृढ़ स्थिति में आ जायेगा।

पारिवारिक आय–

प्राचीनकालीन भारतीय समाज चार वर्णों– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र में विभाजित था, जिसका विभाजन कार्यों के आधार पर किया गया लेकिन बाद में यह कर्म–आधारित व्यवस्था जन्म–आधिारित व्यवस्था मे परिवर्तित हो गयी। वर्ण व्यवस्था स्थापित होने के बाद आश्रम व्यवस्था तथा जातिय व्यवस्था के रूप में परिवर्तन हुआ। जाति व्यवस्था के अन्तर्गत जातियां उच्च जाति और निम्न जातियों में बंटी हुई हैं। भारतीय समाज में अनेक पेशागत जातियां निवास करती हैं। जैसे– खटीक, कुम्हार, नट, अहेरिया, माली, नाई, धोबी आदि।

जनपद बुलन्दशहर में चयनित जातियों में उनकी पारिवारिक आय को आधार मानकर साक्षात्कार किया गया। पारिवारिक आय को चार वर्गों में विभाजित किया गया है–1. 2000 रूपये प्रति माह से कम, 2. 2000 से 4000 रूपये तक, 3. 4000 से 6000 रूपये तक, 4. 6000 रूपये से अधिक।

उत्तरदाताओं से साक्षात्कार प्रश्नावली के माध्यम से उनकी पारिवारिक आय के विषय में जानने का प्रयास किया गया है तथा प्राप्त आंकड़ों को सारणी संख्या–1 में दिया गया है–

सारणी संख्या–1, पारिवारिक आय।

क्र0 सं0	चयनित जातियाँ	उत्तरदाता –ओं की सं0	रू0 2000 से कम		रू0 2000–4000 तक		रू0 4000–6000 तक		रू0 6000 से अधिक	
			आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%	आवृत्ति	%
1	ब्राह्मण	30	5	16.67	10	33.33	5	16.67	10	33.33
2	राजपूत	30	5	16.67	4	13.33	13	43.33	8	26.66
3	वैश्य	30	2	6.66	3	10.00	15	50.00	10	33.33
4	कंजड़	30	6	20.00	10	33.33	2	6.67	12	40.00
5	खाटीक	30	3	10.00	5	16.67	19	63.33	3	10.00
6	कुम्हार	30	5	16.67	10	33.33	10	33.35	5	16.67
7	नट	30	8	26.66	10	33.33	10	33.33	2	6.67
8	अहेरिया	30	5	16.67	11	36.67	9	30.00	5	16.67
9	बाल्मीकि	30	10	33.33	10	33.33	6	20.00	4	13.347
10	सैनी	30	5	16.67	10	33.33	10	33.33	5	16.67
11	माली	30	2	6.66	16	53.34	10	33.34	2	6.66
12	गुंसाई	30	10	33.33	13	43.33	2	6.67	5	16.67
13	जाटव	30	3	10.00	18	60.00	5	16.67	4	13.33
14	गुर्जर	30	5	16.67	2	6.66	18	60.00	5	16.67
15	जाट	30	4	13.33	5	16.67	2	6.67	19	63.33
16	नाई	30	4	13.33	10	33.33	10	33.33	6	20.00
17	यादव	30	3	10.00	5	16.67	5	16.67	17	56.66
18	धोबी	30	10	33.33	5	16.67	10	33.33	5	16.66
19	धीमर	30	8	26.67	7	23.33	10	33.33	5	16.67
20	लोधी राजपूत	30	6	20.00	12	40.00	9	30.00	3	10.00

सारणी–1 से पता चलता है कि ब्राह्मण जाति, राजपूत जाति, कुम्हार जाति, अहेरिया जाति, सैनी जाति, गुर्जर जातियों के 16.67 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय 2000 रूपये से कम है। पारिवारिक आय का दूसरा वर्ग 2000 रूपये से 4000 रूपये तक है। इस वर्ग में ब्राह्मण जाति, राजपूत जाति, कुम्हार जाति, अहेरिया जाति, सैनी जाति, गुर्जर जातियों का प्रतिशत क्रमशः 50,13. 33, 33.33, 36.67, 33.33, 6.67 है। तीसरा वर्ग 4000 रूपये से 6000 रूपये तक है। इस वर्ग से सम्बन्धित ब्राह्मण जाति के 16.67 प्रतिशत, राजपूत जाति के 43.33 प्रतिशत, कुम्हार जाति के 33.33 प्रतिशत, अहेरिया जाति के 30 प्रतिशत, सैनी जाति के 33.33 प्रतिशत, और गुर्जर जाति के 60 प्रतिशत हैं। चौथा वर्ग 6000 रूपये से अधिक मासिक आय है। इस वर्ग से सम्बन्धित ब्राह्मण जाति व वैश्य जाति के परिवारों का प्रतिशत 33. 33 है तथा कुम्हार जाति, अहेरिया जाति, सैनी जाति, गुंसाई जाति, गुर्जर जाति, धोबी जाति और धीमर जाति में यह 16.66 प्रतिशत है। इसी प्रकार खटीक और लोधी राजपूत में यह 10 प्रतिशत है। कंजर जाति में यह 40 प्रतिशत, नट और माली जाति में यह 6.67 प्रतिशत। नाई जाति में 20 प्रतिशत यादव जाति में 56.66 प्रतिशत, बाल्मीकि जाति में यह 13.34 प्रतिशत तथा जाट जाति में यह सर्वाधिक 63.33 प्रतिशत हैं।

4000 से 6000 रूपये वाले वर्ग में कुम्हार जाति, नट जाति, सैनी जाति, जाट जाति, धोबी जाति, धीमर जातियों का प्रतिशत 33.33 है। राजपूत जाति के परिवारों में यह 13.33 प्रतिशत है। इसी प्रकार वैश्य जाति के 10 प्रतिशत कंजड़ जाति के 33.33 प्रतिशत है। खटीक जाति, जाट जाति, यादव जाति और धोबी जाति के लिए यह 16.67 प्रतिशत है तथा जाटव जाति के सन्दर्भ में यह सर्वाधिक 60 प्रतिशत है।

2000 रूपये से कम वाले वर्ग में वैश्य जाति के 6.66 प्रतिशत, खटीक जाति, जाटव जाति के 10 प्रतिशत परिवार है। इसी प्रकार बाल्मीकि जाति, गुंसाई जाति, धोबी जाति के लिए यह 33.33 प्रतिशत है। इसी तरह वैश्य जाति के 10 प्रतिशत परिवार, कंजड़ जाति, गुंसाई जाति व जाट जाति के लिए यह 6.67 प्रतिशत है।

6000 रूपये मासिक आय से अधिक वाले वर्ग में जाट जाति के 63.33 प्रतिशत तथा नट जाति व माली जाति के 6.67 प्रतिशत परिवार हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि समाज की ब्राह्मण जाति, वैश्य जाति, जाट जाति, राजपूत जाति, गुंसाई जाति की अर्थिक स्थिति सर्वाधिक मजबूत है। जाटव जाति, खटीक जाति व बाल्मीकि जाति की आर्थिक स्थिति कमजोर है।

जिस समाज और देश की आर्थिक स्थिति समान रूप से मजबूत होगी और युवाओं को भरपूर रोजगार मिलेगा, वह समाज और देश उतनी ही तीव्र गति से विकास करेगा और लोग आनन्द व सुख में जीवन व्यतीत करेंगे। जनपद बुलन्दशहर में भी अभी अनेक वर्गों, जातियों के आर्थिक सृदृढ़ीकरण की अत्यन्त आवश्यकता है।

व्यवसाय–

भारत एक कृषि प्रधान देश है। आधुनिक भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था रही है। भारत के समाज का प्रत्येक परिवार कुछ न कुछ व्यवसाय अपनाता है, जिससे उसका व उसके परिवार का भरण–पोषण चलता है। जैसे–मजदूरी, व्यापार, कृषि, पशुपालन और निजी अथवा सरकारी नौकरी आदि।

शोध हेतु चयनित प्रमुख जातियों द्वारा अपनाये गये व्यवसाय सम्बन्धी अंकड़ों को एकत्रित किया गया है। प्रतिशतता के आधार पर मजदूरी, व्यापार, कृषि, पशुपालन, सरकारी या प्राईवेट नौकरी आदि व्यवसायों से सम्बन्धित आंकडे प्राप्त किये गये हैं, जो कि उनकी आर्थिक समृद्धि व साधन सम्पन्नता का आधार हैं। देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। आर्थिक कार्यक्रम मानव

का मानवीय सम्बन्ध ही नहीं, अपितु उसके सामाजिक सम्बन्धों को भी परिभाषित करता है।[37]

व्यवसायों से सम्बन्धित विचारों को साक्षात्कार के माध्यम से एकत्रित किया गया है, जिनको सारणी संख्या–2 में दिया गया है।

क्र0 सं0	चयनित जातियाँ	उत्तरदाताओं की संख्या	मजदूरी		व्यापार		कृषि		पशुपालन		सरकारी / प्राईवेट नौकरी	
			आवृति	%	आवृति	%	आवृति	%	आवृति	%	आवृति	%
1	ब्राह्मण	30	2	6.67	4	13.33	15	50.00	7	23.33	2	6.67
2	राजपूत	30	4	13.33	8	26.67	12	40.00	3	10.00	3	10.00
3	वैश्य	30	–	–	25	83.33	2	6.66	1	3.33	2	6.67
4	कंजड़	30	22	73.13	5	16.67	2	6.66	1	3.34	0	0
5	खटीक	30	20	66.67	5	16.67	3	10.00	2	6.67	0	0
6	कुम्हार	30	7	23.33	3	10.00	15	50.00	3	10.00	2	6.67
7	नट	30	10	33.33	10	33.33	5	16.67	5	16.67	0	0
8	अहेरिया	30	10	33.33	8	26.67	9	30.00	3	10.00	0	0
9	बाल्मीकि	30	15	50.00	2	6.67	5	16.66	2	6.67	6	20.00
10	सैनी	30	6	20.00	4	13.33	15	50.00	3	10.00	2	6.67
11	माली	30	10	33.33	12	40.00	6	20.00	2	6.66	0	0
12	गुंसाई	30	10	33.33	2	6.67	16	53.33	2	6.66	0	0
13	जाटव	30	8	26.67	5	16.67	5	16.67	7	23.33	5	16.67
14	गुर्जर	30	2	6.66	5	16.67	18	60.00	5	16.67	0	0
15	जाट	30	2	6.66	6	20.00	13	43.33	5	16.67	4	13.33
16	नाई	30	3	10.00	6	20.00	15	50.00	3	10.00	3	10.00
17	यादव	30	2	6.67	2	6.67	11	36.67	7	23.33	8	26.67
18	धोबी	30	12	40.00	12	40.00	3	10.00	3	10.00	0	0
19	धीमर	30	13	43.33	6	20.00	6	20.00	5	16.67	0	0
20	लोधी राजपूत	30	7	23.33	4	13.33	10	33.33	3	10.00	6	20.00

जनपद में एकत्रित आंकडों के अनुसार ब्राह्मण जाति, यादव जाति, गुर्जर जाति व जाट जाति के 6.67 प्रतिशत लोग मजदूरी व्यवसाय में लगे हुए हैं, जो कि समाज की अन्य जातियों की अपेक्षा सबसे कम हैं। सबसे ज्यादा मजदूरी कंजड़ जाति के 73.33 प्रतिशत परिवार करते हैं।

इसी प्रकार 33.33 प्रतिशत नट जाति, अहेरिया जाति, माली जाति, गुंसाई जाति, लोधी राजपूत जाति के लोगों ने मजदूरी व्यवसाय अपनाया है। 23.33 प्रतिशत कुम्हार जाति, 13.33 प्रतिशत राजपूत जाति, 66.67 प्रतिशत खटीक जाति, 40 प्रतिशत धोबी जाति, 50 प्रतिशत बाल्मीकि जाति, 20 प्रतिशत सैनी जाति, 26.67 प्रतिशत जाटव जाति, 10 प्रतिशत नाई जाति व 43.33 प्रतिशत धीमर जाति के लोग मजदूरी करके अपने परिवार का पालन–पोषण करते हैं।

इसी प्रकार बाल्मीकि जाति, गुंसाई जाति व यादव जाति के 6.67 प्रतिशत परिवार व्यापार में सलग्न हैं, जो कि सबसे कम हैं, और सबसे अधिक व्यापार वैश्य जाति के 83.33 प्रतिशत परिवार करते हैं। ऐसे ही 16.67 प्रतिशत कंजड़ जाति, खटीक जाति, गुर्जर जाति के लोग व्यापार कार्य में लगे हैं तथा 26.67 प्रतिशत राजपूत जाति व अहेरिया जाति, 10 प्रतिशत कुम्हार जाति, 13.33 प्रतिशत सैनी जाति, ब्राह्मण जाति व लोधी राजपूत जाति, 20 नाई जाति, धीमर जाति, 40 प्रतिशत धोबी जाति व माली जाति के परिवार व्यापार व्यवसाय से जुड़े हैं।

इसी प्रकार बुलन्दशहर में अनेक परिवार कृषि से जुडे हैं। वैश्य जाति, कंजड़ जाति के 6.66 प्रतिशत लोग कृषि में लगे हैं, जो कि सबसे कम हैं तथा सर्वाधिक गुर्जर जाति के 53.33 प्रतिशत परिवार कृषि करते हैं। 16.67 प्रतिशत नट जाति बाल्मीकि जाति, जाटव जाति, 10 प्रतिशत खटीक जाति, धोबी जाति, 20 प्रतिशत धीमर जाति, माली जाति, 33.33 प्रतिशत लोधी राजपूत जाति, 36.67 प्रतिशत यादव जाति, 30 प्रतिशत अहेरिया जाति, 40 प्रतिशत राजपूत जाति, 50 प्रतिशत ब्राह्मण जाति के परिवार कृषि कार्य करते हैं।

इसी प्रकार कुछ परिवार पशुपालन में संलग्न हैं। वैश्य जाति के 3.33 प्रतिशत लोग पशुपालन करते हैं, जो सबसे कम हैं तथा सबसे अधिक 23.33 प्रतिशत परिवार जाटव जाति के हैं, जो पशुपालन से जुड़े हैं। 10 प्रतिशत राजपूत जाति, कुम्हार जाति, अहेरिया जाति, सैनी जाति, नाई जाति, धोबी जाति व लोधी राजपूत जाति तथा 6.67 प्रतिशत खटीक जाति, बाल्मीकि जाति, माली जाति, 3.34 प्रतिशत कंजड़ जाति, 16.67 प्रतिशत नट जाति, गुर्जर जाति, जाट जाति व धीमर जाति के लोग पशुपालन करके परिवार का पालन–पोषण करते हैं।

कुछ परिवार सरकारी अथवा प्राईवेट नौकरी भी करते हैं तथा ऐसे परिवार अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में हैं। 6.67 प्रतिशत ब्राह्मण जाति, वैश्य जाति, कुम्हार जाति, सैनी जाति, के लोग सरकारी नौकरी अथवा प्राईवेट नौकरी में संलग्न हैं। 10 प्रतिशत राजपूत जाति, नाई जाति, 20 प्रतिशत लोधी राजपूत जाति, बाल्मीकि जाति, 13.33 प्रतिशत जाट जाति, 16.67 प्रतिशत जाटव जाति तथा सबसे अधिक 26.67 प्रतिशत यादव जाति के लोग सरकारी नौकरी अथवा प्राईवेट नौकरी में संलग्न हैं।

निष्कर्षतः जनपद–बुलन्दशहर के समाज में विभिन्न वर्गों द्वारा मजदूरी, व्यापार कृषि, पशुपालन तथा नौकरी जैसे व्यवसायों को अपनाया गया है। इनके माध्यम से जनपद का आर्थिक ढांचा मजबूत हो रहा है। यद्यपि जनपद में औद्योगिकीकरण, वितरण जैसी सुविधाओं की और आवश्यकता है।

: सन्दर्भ सूची :

1. वेबरमेक्स, द थ्योरी ऑफ सोशल एण्ड इकोनोमिक्स आर्गेनाइजेशन, पृष्ठ 150, न्यूयोर्क, 1967।

2. मिश्र, जयंशकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ 553।
3. महाभारत, उद्योगपर्व, 72.23.24, नीलकण्ठ टीका सहित, पूना 1929, गीता प्रेस गोरखपुर।
4. ऋगवेद 10.90.12 सायण भाषा सहित सम्पादक– एफ0 मैक्समूलर, 1890–92, भाग–5, वैदिक संशोधन मंडल, पूना, 1933–51।
5. मिश्र जयंशकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ 61।
6. शतपथ ब्राह्मण, 13.22.18, अच्युत ग्रन्थ माला कार्यालय वाराणसी, संवत् 1994–97।
7. वही, 13.22.98।
8. मनुस्मृति 10.5.8.10 कुल्लुक भट्ट, की टीका सहित, बम्बई 1946।
9. सचदेवा डी0आर0 व विद्याधर–समाजशास्त्र के सिद्धान्त, पृ0 382, किताब महल इलाहाबाद, 15 वां संस्करण 1997।
10. दूबे एस0सी0–इण्डियन विलेज, पृ0 57, एलाइड पब्लिशर, बोम्बे, 1995।
11. अर्थशास्त्र 1.70.10.110, सम्पादक, आर0 शामशास्त्री, मैसूर 1902।
12. महाभारत एक पर्व 67.35 नीलकण्ठ की टीका सहित पूर्ण, 1921, गीता प्रेस, गोरखपुर।
13. राव एवं एस0ए0, अरबेवाईजेशन एण्ड सोशल चेंज पृ0 117, ऑरिएण्ट लॉग मैन लि0, नई दिल्ली 1970।
14. ऋगवेद 8.78.10, सायण भाषा सहित सम्पादक एफ0 मैक्समूलर 1890–92, भाग–5, वैदिक संशोधन मंडल, पूना, 1933–51।
15. वही, 8.6.48।
16. मिश्र, जयंशकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ 557।
17. शतपथ ब्राह्मण 2.3.4.13, अच्युत ग्रन्थ माला कार्यालय वाराणसी, संवत् 1994–97।
18. अथर्ववेद 7.18.39, सम्पादक आर0 रॉय, डब्यू0डी0 हिटले, बर्लिन 1856 सम्पादक, श्रीपाद शर्मा, औधनगर 1958।
19. पाणिनी–33.112, अष्टाध्यायी, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1929।
20. मिश्र जयंशकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृष्ठ 585।
21. वही, पृश्ठ 598।
22. सिंह अनिल कुमार, ग्रामीण समुदाय में सामाजिक परविर्तन, पृ0 214, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992।
23. देसाई ए0आर0, भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, पृष्ठ 23, रावत पब्लिकेशन, दिल्ली, 1997।
24. आन्द्रे विटे, कास्ट क्लास एण्ड पॉवर, पृष्ठ 191, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस बोम्बे, 1966।
25. आहुजा राम, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, पृ0 1983, रावत पब्लिकेशन, जयपुर व नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995।
26. देसाई, ए0आर0–भारतीय समाजशास्त्र, पृष्ठ 55, रावत पब्लिकेशन, जयपुर व नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997।
27. वही, पृष्ठ 55।
28. नोवाक डेविड डब्लपमेन्ट एण्ड सोसायटी, दा डायनामाईट ऑफ इकोनोमिक्स चेन्ज, पृष्ठ 156।
29. सिंह अनिल कुमार, ग्रामीण समुदाय में सामाजिक परविर्तन, पृ0 238, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992।
30. देसाई, ए0आर0–भारतीय समाजशास्त्र, पृ0 53–54 रावत पब्लिकेशन, जयपुर व

नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997।
31. वही, पृष्ठ 56।
32. शर्मा के0एल0, भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन, पृष्ठ 233, रावत पब्लिकेशन, जयपुर व नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997।
33. वही पृष्ठ 238।
34. बौद्धायन धर्मसूत्र 1.5.113–114, श्री गोविन्द स्वामी चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
35. याज्ञवल्क्य स्मृति–2.49 पर मिटाक्षरा, विज्ञानेश्वर कृत टीका, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1918।
36. शतपथ ब्राह्मण 13.22.18, अच्युत ग्रन्थमाला कार्यालय वाराणसी, संवत 1994– 97।
37. वेबरमेक्स, द थ्योरी ऑफ सोशल एण्ड इकोनोमिक्स आर्गेनाजेशन, पृष्ठ 150, न्यूयोर्क, 1967

Samaj Vigyan Shodh Patrika

Vol. 2 No. XXXX (2017-18)
ISSN 0973-7626
RNI: UPBIL/2005/16107
OCTOBER 2017 - MARCH 2018

SWAMI DAYANAND SARASWATI : PIONEER OF INDIAN RENAISSANCE AND REFORMATION (1824-1883)

Dr. Brahma Autar Sharma
Principal & Head, History Deptt.
L.R. Mahavidhyalaya, Jasrana (U.P.) 283136
(Dr. B.R.A. University, Agra)

Many socio-religious organizations witnessed the emergence in almost all the regions of nineteenth century India due to the prevalence of several social evils. All the organizations intended to reform the social structure of the Indian society. These reform movements emerged primarily on account of the impact of western ideas and thoughts. The English education created a class of Indian middle class which deemed the socio-religious reforms very essential on the western lines.[1] The social reformers and the Indian elite were greatly disturbed to see the superstitions and social obscurantism in the society. All these were instrumental in creating dominance of the priestly class during the medieval period. Europe was no exception to it as western Countries had also been suffering from the identical religious susceptibilities for quite a long period.[2] Renaissance and Reformation gradually paved the way for- the foundation of new set of values, concepts ideas and formulae in the realm of art, literature, sciences and social sciences covering a variety of disciplines.[3] The dominance of the clergy class also came to an end and a national standard of faith was set-up. All these changes gradually occurring prepared the ground for the beginning of nationalism, secularism and democracy in western world.[41] Several socio-religious organizations such as Brahmo Samaj, Prarthana Samaj. Paramhansa Mandli, Theosophical Society etc. were already founded in India. Some regional and castes organizations also came into being but their activities were particularly restricted to regions and castes.[5] An attempt is being made to study Swami Dayanand as a pioneer of renaissance and reformation in India and how he dispelled the nation of identity crisis being faced by the Hindus in the 19th century Punjab. He founded the Arya Sarmaj in 1875 as the Hindu society was not only suffering from religious susceptibilities but also firmly believed in the stereo-type of worships non-visible in any part of the world. He stoutly rejected all those religious practices, faiths and bigotry which were based primarily on the false and irrational notions.[6]

.....

Dayanand was born in 1824 in a Brahmana family at Tankara in the princely state of Morvi, Gujarat. He was a rebel and militant child of his family from the very beginning. The

family followed the Shaiva traditional way and this child was nurtured according to the tenets of this branch of Hindusim.[7] Sanskrit grammar and some Vedic texts were deemed prudent for learning some lessons by heart. Whenever there were religious discourses he always accompanied his father. Thus he completed his formal education which was quite sufficient for his family business but started seeking the truth of the worldly life.[81] He had to pass through the periods of severe conflicts and gradual sufferings. His faith in the traditional religious practices began to wean away when he saw a rat dancing on Lord Shiva's idol. Since then, he started opposing the idol worship and even his father's constant arguments and persuasion proved futile in this regard.[9]

Two incidents occurred in the family i.e. deaths of his younger sister and uncle left him "in a state of utter dejection and with a still profounder and conviction". He firmly believed that there was "nothing stable, nothing worth living for in this World". In order to divert his attention from such spiritual thrust, his parents wanted him to marry and were in search of a suitable girl. He left his home at the age of twenty two in search of truth/ salvation.[10] He continued to wander hither and thither more than fifteen years but utterly failed in his mission. Ultimately, he found Swami Virjananda, a true guru at Mathura, who constantly taught him Sanskrit grammar, Vedas and yoga for three years (1861-63). Virjananda had already established himself as an authority on grammar which made him acquaint with the deepest secret of religion and salvation hidden in Hindu scriptures. He profoundly studied the Ashtadhyayi, Mahabhasya, Nirukta, Nighantu in order to master the treasury of the Vedas and control the mind and body through the yogic powers."[11]

During his stay at the Ashram of Virjananda, Dayanand was a changed personality. The Vedas were deemed as the biggest treasure of knowledge for all the branches concerning to an human being. His guru was fully satisfied with his attainment of deepest knowledge of Vedic and other contemporary literature. Hence Dayanand was asked to spread the true knowledge hidden in the Vedas. When he was about to leave the Ashram, his guru explicitly observed: "I demand from you something else as a dakshina. Take a vow before me that so long as you live you will work incessantly to spread the true knowledge of the Vedas and the Arsha-granthas and condemn works which teach false doctrines and tenets: and that you will even give your life if necessary in re-establishing the Vedic religion. Dayanand bowed and vowed Tathastu, so it be.[12] This was the dakshina demanded by Virjananda from his disciple, Dayanand. It is worthy to spread the message given by his guru. He, undoubtedly, preached and succeeded in his mission to the last breath of his life.

Swami Dayanand clearly declared the Vedas as infallible which possessed a reservoir of knowledge of the past, present and future. He was of the firm view that every Hindu should study the Vedas which had all types of information's: philosophical technical and scientific. One can discover in the Vedas all modern science, engineering, military and even non-military.[13] Swamiji thus challenged the western world which boasted of its new science and technology, India had already attained so many discoveries in the ancient period. Besides, the Vedas were the original source of religion, culture and civilization of India and these were the real fountain head of Indian thought, philosophy and knowledge.[14]

Another vital question that gripped the mind of Swamiji was the education which could change the over-all personality of an individual.

The study of literature always discarded the century's old superstitious dogmas and prescriptive sentiments. Through education, one can understand and know a variety of movements started earlier in the realms of political, social, cultural and economic for the well-being of the humanity.[15] When Indians became educated, they came to know the numerous defects of British rule and its, varied impact on the Indian society. The Arya Samajists opened schools and colleges in many parts of northern India which were by and large educationally backward.[16] He laid great stress on the education of both the boys and girls in their mother tongue so that they could think rationally and abstain from religious beliefs and dogmas prevailing in the then Indian society. He knew it well that education was the most potent instrument of socio-religious and cultural changes. Thus the expansion of education was deemed quite essential for the transformation of Indian society by him. Later on, both the Anglo-vedic and Gurukula systems of educations went simultaneously for the betterment of the society.[17]

Swami had a programme of social reform based on equality. Though he opposed the hereditary caste system but stood for the four varnas to be determined by merit and not by birth.[18] The younger generation had a special attraction for its teachings. Soon the path shown by the Arya Samaj bagan to be broadened and its centres were established in many parts of northern India. The peasantry in Haryana got attracted towards it as it relieved them from many religious susceptibilities going on in the then society.[19] It was a progressive movement in this sense as 'its preachers often organized prabhat pheris (community processions) in which they attacked the social evils, advocated education and even preached nationalism in order to mould the public opinion for socio-cultural and political awakening among the masses.[20]

Swamiji always opposed idolatry and other social evils prevailing in the society. He never yielded to the Brahrnanical hegemony as far as the religious conscience was concerned. In many of his religious discourses, he often won over the temptations and frowns of the orthodox sections of the society. He continued to decry the evils of Christianity when the British rule was at its climax. He stood for the supremacy of an individual in search of perfect truth and was a great ethical idealist.[21] He was essentially an ascetic, a staunch puritan and a valiant fighter for the truth. He always decried the evils prevailing either in the Islam or Christianity and even did not fear when he started reconverting the Muslims into Hindu-fold. His mobilization for reconversion was full of threats but he never cared for them. He was labelled as a reactionary as far as this aspect was concerned.[22] He attacked both the Islam and Christianity as two proselytizing religions and started the Suddhi and Sanghatan movements to counteract their activities.[23]

Swamiji advocated the parity among the men and gave it too much prominence. A man should be treated in term of his merit not on the hierarchical gradation. The institutions opened by the Arya Samajists did not make any distinction of colour, creed and caste but admitted the boys and girls of other castes and communities. This was the only organization in which no priest enjoyed any superiority or any woman or untouchable was not prohibited from even studying the Vedas. He often favoured for granting all the rights essential for better life to all persons without any distinction.[24] He firmly believed that the women should be given high status in every walk of' life as far as the education, marriage, property and professions were concerned. In order to counteract social

division and inequality, inter-dinning and inter-marriages should be encouraged among the members of different castes in India. He firmly believed that the physical, intellectual and spiritual growth of an individual would be quite significant if it was directed by the principle of common good and true sense of social service.[25]

Swamiji made it clear that the polity, religion and learning were the three major agencies which controlled the life of an individual. In the polity only those individuals should be made members of political institutions who possessed the qualities of self-control, truthfulness and learning. His constant studies of Vedas and Manusmriti clearly indicate that he was for the close connection between the politics and morality.[26] The second authority was the religion which should give an incentive to the moral and spiritual advancement of the individuals. The members of the religious institutions should be learned, intelligent, pious, honest, disciplined along with renuniciatory orientation in the society. They should give guidance to the members of ruling class for the well-being of the masses. The learning institutions should impart proper education to the people in order to make them good citizens on the part of the government as a welfare state.[27] In his opinion, law was the supreme authority through which justice and order should be dispensed with so that the peoples' interests could be fully protected in the country. Thereby, he interpreted the meaning of nationalism as the colonial rule bitterly failed not only to dispense justice but also in meeting the genuine aspirations of the India people.[28]

Swamiji always held women in high esteem and they should be given high respect not only in the family but also in the society. She had quite respectable position in the Vedic period. He was against their sexual, physical, social and economic exploitation as they had continuously been exploited for centuries.[29] He explicitly observed while quoting Manusrmriti "where women are honoured being endowed with learning, the men of house are called gods and live in happiness at home but where not honoured all acts become fruitless.... That family soon goes to ruin where women are sad and miserable…. That family enjoys perpetual prosperity where women are filled with joy and delight."[30] He clearly stated that if the men desired wealth, they should honour women and supply them with jewels, viands and other requisites on the occasions of festivals and jubilees.[31] He fought for the rights of women to educate, to the study of Vedas to do marriage of their own choice, to have equal status in society, to secure widow's right to property and to remarry etc. He always opposed child marriage and was a great supporter of their equality with man.[32]

Though the Arya Samaj was founded in Guajrat, it became quite popular in the Punjab where Hindus were in the cultural identity crisis. It helped in the emergence of social consciousness among the Punjabi Hindus elite.[33] It was the communal competition among the Hindus, Muslims and Sikhs that compelled the Hindu elite to channelise the Hindu strength for the identity formation in order to respond to the non-Hindu communal forces.[34] Besides, it created a platform for them to meet the challenges posed by the Christian missionaries for mass conversions. Moreover, the Punjabi elite failed to bear the crafty policies of the colonial masters who always used one community against the other.[35] It is quite true that English education and institutions had started developing the social base of the Punjabis under the colonial rule in the Punjab. Hence, it developed the form of a crisis of identity in a competitive society. It is true to say that it was Swamiji's work and vision which

helped the Punjabi Hindus to solve their identity crisis problem.[36]

Swamiji was proud of Indian culture 'which is very rich in all contents'. He did not have any sympathy with those Indians who believed or adopted western culture as their way of life. He observed that western culture and thought had no moral values and virtues like Indians. He amazed why they should feel inferior and feel ashamed of calling themselves as Indians.[37] He frankly asked the Indians, "why have you parted with your national pride and prestige? In the whole word, there is no country superior to India that's why it is called the land of God." He frankly admitted that "culturally we are a far too superior nation we were sometimes world teacher. All education that spread in the world started originally from India then it went to Egypt, from there to Greece, from Greece to America and other countries."[38]

Swamiji emphasized that Hindi should be the national language as 'it is being spoken extensively in the larger part of the country'. This was such a language that based on the most scientific alphabets. However, he was Gujrati and knew his mother-tongue well but he gave to Hindi an utmost significance and wrote his famous work SATYARTH PRAKASH in this language so that a larger population could become familiar with the Vedic literature in which all sorts of knowledge is available.[39] He did not favour English as the medium of instruction but country's own language should take its place. It does not mean that he was opposed to western language, literature and modern sciences but was for greater preference to Vedic literature and Hindi language. He asserted that the great rishis produced a vast material, "digest their philosophy, assimilate their thoughts and then supplement such a kind of oriental learning with the occidental knowledge." Do not neglect the study of English as it is the Rajyabhasha."[40] He emphasized that Indian must be conversant with "their own culture and traditions lest they should be anglicized to such and extent that they should know more about Bacon and Mill than about Kapila or Patanjali". He tried to lay great stress on the study of Sanskrit not at the cost of Hindi.[41] Arya Samajists after the death of Swami paid special attention towards the knowledge of western language, literature, science and technology in the 20th century.[42]

.....

The British writers and administers in the Punjab such as Sir Mackworth Young, Sir Denzil Ibbetson, Sir Michel O'Dawyer, Sir Lepel Griffin, Sir Robert Egerton. Velentine Chirol, Hans Khan etc. raised finguers at the Arya Samaj and called it "a political movement as it played an important part in the seditious agitation in the Punjab and United provinces."[43] Even before the foundation of the Arya Sarnaj, Swami Dayanand was called "a rebel" by lord Northbook, the Virceroy of India (1873-76).[44] Most of the officials asserted that the Arya Samaj was a political body which raised anti-British agitation in the Punjab. Valentive Chirol, the editor of the Times (London) visited India in 1907 and wrote a book Indian Unrest in which he fully recognized it as a political body which always engaged in anti-British agitation and activities, Sir. Mackworth Young, Lt. Governor of the Punjab, was the first administrator who explicitly observed that the movement of the Arya Samaj was "the most active and at the same time most dangerous" in the Punjab.[45] Its leaders like Lala Lajpat Rai, Mahatma Hans Raj, Swami Sharddhanand refuted their statements and always called their movement purely a socio-cultural movement.[46] In the end, it may be pointed out that Swamiji's contribution in emancipating women regarding the child marriage, widowhood, polygamy,

purdah sati, dowry and education was, undoubtedly noteworthy.[47] It was socio-cultural movement that greatly contributed to the growth of new social consciousness from urban to rural elite and strengthened the feelings of self-reliance, confidence which engendered the militant nationalism to carry out his mission in India. He denounced idol worship, rites, rituals, dogmas and hegemony of the priestly class, and other socio-religious evils of the time.[48] A close and critical study of the Vedas and other contemporary literature had fully convinced him that the Indian people who had forgotten the "scientific and etymological systems"[49] must be made familiar with them again. He intended regeneration of the whole land of Aryavarta for the sake of the larger body of Hinduism. He was a missionary and philosopher which joined his theology, morals, economics, politics together for the commonweal of the Indian people.[50] This was his real dharma.

REFERENCES

1. Kohn, Hans, A History of Nationality in the East (London. 1929) pp.55-56.
2. Ibid.
3. Pollard. A.F., The British Empire (London. 1908) pp.38 39; Laski, H.J., The Rise of European Liberalism (London, I 937) pp.29-30.
4. Desai. A.R., Social Background of Indian Nationalism (Bombay. 1987) p.53.
5. Chandra, Bipan and others, India's Struggle for Independence (Delhi, 1987) p.83.
6. Desai, op. cit., pp. 290-91.
7. Yadav, K.C., Autobiography of Dayanand Saraswati (Delhi. 1976) pp.15-16.
8. Ibid., pp. 17-18.
9. Garg, Ganga Ram, World Perspectives on Swami Dayanand Saraswati (Delhi 1984) p.13.
10. Ibid.
11. Yadav, op. cit., p.18.
12. Muller, Max. Biographical Essays (London, 1884) P.64.14. ibid.
13. Desai, op. cit., pp. 163-164.
14. Jones, Kenneth W., Socio-Religious Reform Movements in British India.(Delhi, 1994) p. 193.
15. Ibid., pp: 98-103.
16. Desai, op. ct., p. 291.
17. Singh, Pardaman S.P. Shukla (ed.) Freedom Struggle in Harayana and the Indian National Congress, 1885-1985 (Chandigarh, 1985) p. 11.
18. Ibid.
19. Varuna, V.P. Modern Indian Political Thought (Agra, 197l) pp. 29-30.
20. Sarma, D.S., Hindustan Through the Ages (Bombay, 1956) pp. 97-98.
21. Ibid., pp. 98-99.
22. Chabbra, G S. Advanced Study in the History of Modern India. Vol.III (1920-1947) (Delhi, 1977) pp.67-68.
23. Ibid.,p.68.
24. Appadorai, A Indian Political Thinking in Twentieth Century: From Naoroji to Nehru (Oxford.1971) p.147.
25. Ibid.
26. Ibid,pp 147-48.
27. Pandit Bhagvaddatta (ed.) Swami Dayanand Ke Patra aur Vijnapana, Part II (sonepat, 1981) pp.746-50.
28. Ibid.
29. Ibid.
30. Ibid.
31. Jones. Kenneth W., Arya Dharam : Hindu Consciousness in 19 Century Punjab (Delhi, 1976,) 1, p.185,315.
32. The Indian Historical Review, Delhi, Vol. Nos.1-2,pp. 290-91.35. Ibid.

33. Jones. Kenneth W., Arya W., Arya Dharm: Hindu Consciousnss in 19 Century Punjab (Delhi, 1976) 185. 315.
34. The Indian Historical Review, Delhi. Vol. Nos. 1-2. pp. 290-9l. 35 Ibid.
35. Ibid.
36. Jones. Kenneth W., Arya Dharm p.66.
37. Dayanand, Swami. Satyarth Prakash, pp. 427-39.
38. Ibid.
39. Bhan, Suraj, Dayanand : His Life and work (Jullundur, 1956) p. 152-53.
40. Ibid., pp. 154-55.
41. Ibid.
42. Sharma, Shri Ram (ed.) Lajpat Rai, A History of the Arya Samaj (Delhi, 1967) p. 148.
43. Chirol, Valentine, Indian Unrest (London. 1910) p. 112.
44. Sen. N.B., Wit and Wisdom of Swami Dayanand (Delhi, 1964) p.7.
45. Mackworth Young to Elgin (Viceroy of India) Simla, 15 July.1887; Elgin Collection (National Archives of India, New Delhi).
46. Rai, Lajpat, The Arya Samaj (London, 1915), pp. 145-155.
47. Singh, Pardaman and S.P. Shukla, op. cit., p. 12.
48. Desai, op.cit., p. 292.
49. Arya Samaj, Calicut Branch (ed.) Arya Samaj : Swami Dayanand Saraswati (Calicut, 1924) p.17.
50. Ibid., pp. 17-20.

FOR FURTHER STUDY SEE

1. R.C. Agrawal, Bharat Ke Pramukh Rajnitik Vicharak, New Delhi, 1990.
2. S.P. Sen (ed.), Social and Religious Refrom Movements in the 19th and 20th Centuries.
3. S.P. Sen (ed.), Social Contents of Indian Religious Refrom Movements. Calcutta, 1978.
4. Machbe & Daffuar, Adunik Bharat Ke Vicharak, Patna, 1978.
5. V.A. Narain Social Hiostory of Modern India, Meerut. 1972.
6. K.K. Datta, Dawn of Renascent India, Calcutta, 1964.
7. J.N. Farquhar, Modern Religious Movements in India, New York. 1924.